MANAVA BHARATI
INTERNATIONAL SCHOOL

AFFILIATED TO CBSE, NEW DELHI

# शब्दों की ज़ुबानी

## हमारी कविता - हमारी कहानी

# शब्दों की ज़ुबानी

## हमारी कविता - हमारी कहानी

(असंपादित)

**MANAVA BHARATI INTERNATIONAL SCHOOL**

**Patna (Bihar, India)**

# CONTENTS


| Sr. No. | Title | Writer/Author | Page No. |
|---|---|---|---|
| 1. | समय | Arohi Sinha, 7'B' | 7-7 |
| 2. | ट्रेन का सफर | विवान पांडे, 9‘B’ | 8-9 |
| 3. | चलो चलते हैं | Raj Vang, 7‘B’ | 10-10 |
| 4. | वृक्ष | पुष्कर कुमार, 7‘B’ | 11-11 |
| 5. | जीवन का मार्ग | अक्षिता दिवाकर | 12-12 |
| 6. | कौन | अनिकेत | 13-13 |
| 7. | पानी का नलका | | 14-14 |
| 8. | प्रकृति की झलक | अंशिका राज, 7‘B’ | 15-15 |
| 9. | सोनू, हाथी और राजू | आद्या वत्स, 7‘B’ | 16-17 |
| 10. | वह दिन मैं फिरा भूल नहीं सकता | Alfiya Atiq, 6‘B’ | 18-19 |
| 11. | भुतिया महल का खजाना | Karan Kumar, 6‘A’ | 20-22 |
| 12. | खुश या दुखी लेकिन एक ही चेहरा | शान शर्मा, 6‘A’ | 23-25 |
| 13. | मीरू और उसकी ईमानदारी | Vagisha Kumar, 6‘B’ | 26-26 |
| 14. | जंगल की यात्रा | Priyanshu kumar, 6‘B’ | 27-27 |
| 15. | मिट्ठू की नई दुनिया | Kumari Bhawna, 6‘B’ | 28-28 |
| 16. | दयालु चिड़िया | Md. Tahmeed Alam, 6‘B’ | 29-29 |
| 17. | अंतहीन दहलीज | सांधवी गुप्ता, 6‘B’ | 30-32 |
| 18. | कृष्ण का चमत्कार | Harshit Kumar, 6‘B’ | 33-33 |
| 19. | फूल | अनुष्का सिंह, 7‘A’ | 34-34 |
| 20. | शिक्षा का महत्व | नव्या, 7‘A’ | 35-35 |
| 21. | पर्यावरण हूँ मैं | Rudresh, 7‘A’ | 36-36 |
| 22. | प्रकृति का सौंदर्य | Ragad Ejaz, 7‘B’ | 37-37 |
| 23. | अन्न दाता | दिशा शर्मा | 38-38 |
| 24. | संवाद | Md. Alhamza Ejaz Mallick, 7‘A’ | 39-39 |
| 25. | आत्मविश्वास | संस्कृति गुप्ता, 7‘B’ | 40-40 |
| 26. | शिक्षक | तलत परवीन, 7‘B’ | 41-41 |
| 27. | समय | | 42-42 |

| Sr. No. | Title | Writer/Author | Page No. |
|---|---|---|---|
| 28. | मूर्ख कौनः नाविक या पंडित? | रूद्र आनंद, 7‘B’ | 43-44 |
| 29. | माँ का स्नेह | तनिष्का मिश्रा, 7‘B’ | 45-45 |
| 30. | कान्हा | रीशा कुमारी, 7‘B’ | 46-46 |
| 31. | जीवन की सुंदरता | Divya Kumari, 7‘B’ | 47-47 |
| 32. | फुटबॉल | श्री बालाजी, 7‘B’ | 48-48 |
| 33. | अपनी मंजिल पाओ | Anshika Kumar, 7‘B’ | 49-49 |
| 34. | घड़ी | रूद्र आनंद, 7‘B’ | 50-50 |
| 35. | मेरा भारत देश महान् | मन्नत राज | 51-51 |
| 36. | छोटी–सी आशा | Dakshina Anish, 7‘B’ | 52-52 |
| 37. | संगति | ऐश्वर्या गौरव, 7‘B’ | 53-54 |
| 38. | कविता | Anant Prakash, 7‘B’ | 55-55 |
| 39. | | Ayaan Khalid, 7‘B’ | 56-56 |
| 40. | अनोखा दोस्त | Aditi Anand, 8‘A’ | 57-58 |
| 41. | स्क्विड गेम | Yash Sharma, 8‘A’ | 59-59 |
| 42. | एक अनोखी घटना | सपना कुमारी, 8‘A’ | 60-61 |
| 43. | पिता का दिया हुआ अनोखा उपहार | Noya Imam | 62-62 |
| 44. | हम पंछी उन्मुक्त गगन के | Satwik, 7‘A’ | 63-63 |
| 45. | छोटे सपने बड़ी उड़ान | भारती अर्थवी कृष्णा, 8‘B’ | 64-64 |
| 46. | दो शेर की दोस्ती | आलोक कुमार, 8‘B’ | 65-66 |
| 47. | कहानी | Md. Warquan, 8‘B’ | 67-67 |
| 48. | एक लड़के की कहानी | तलहा खान | 68-68 |
| 49. | अच्छा हो मजाक! | Ananya, 8‘B’ | 69-69 |
| 50. | जिंदगी कैसे लेनी चाहिए...। | शैलवी कुमारी, 8‘B’ | 70-70 |
| 51. | जब मैं जादूनगरी में पहुँच गया | हर्ष राज, 8 | 71-71 |
| 52. | हिरण की प्यास | Saurav Anand, 8‘B’ | 72-72 |
| 53. | बोले हुए शब्द वापस नहीं होते! | Pallavi, 8‘G’ | 73-73 |
| 54. | चतुर किसान | Ragini Dangi, 8‘B’ | 74-74 |
| 55. | बॉर्डर पर सैनिक | Aditya Sushant, 8‘B’ | 75-76 |

| Sr. No. | Title | Writer/Author | Page No. |
|---|---|---|---|
| 56. | देशभक्ति | Syed Aban Faisal, 9‘B’ | 77-77 |
| 57. | स्त्री शिक्षा | Aksharam Sharma, 9‘A’ | 78-78 |
| 58. | प्रकृति | Shrishti Snehal, 9‘A’ | 79-79 |
| 59. | संघर्ष की वास्तविकता | आरव सिन्हा, 9‘A’ | 80-80 |
| 60. | नारी शिक्षा का दीप जलाओ | अविक कुमार, 9‘A’ | 81-82 |
| 61. | वसंत का आगमन | Shrishti Snehal, 9‘A’ | 83-83 |
| 62. | सफर का अनुभव | रौशनी कुमारी, 9‘A’ | 84-84 |
| 63. | लोभ बुरी बला है | Heti Raj Sudarshan, 9‘A’ | 85-85 |
| 64. | मानव सभ्यता की उत्पत्ति | Mrigendra K. Singh, 9‘A’ | 86-86 |
| 65. | प्रकृति तुम निराली हो | राजिया प्रवीन, | 87-87 |
| 66. | अद्भुत हिरन | Anshika Singh, 9‘B’ | 88-90 |
| 67. | मेहनता का फल | Amrita Kumari, 9‘B’ | 91-94 |
| 68. | विराट की अनूठी कहानी | आदित्य राज, 9‘B’ | 95-95 |
| 69. | असली धन | Preet | 96-97 |
| 70. | अमन की सफलता | शिव केशव, 9‘B’ | 98-99 |
| 71. | शतरंज | महिमा सिंह, 9‘B’ | 100-102 |
| 72. | सपनों की दुनिया | रिया | 103-104 |
| 73. | शिक्षा का दीप | अनमोल रतन, 9‘A’ | 105-105 |
| 74. | गोलों की दुकान | कुमार रूद्र, 4‘A’ | 106-107 |
| 75. | ईमानदार किसान | मन्नत खान, 4‘A’ | 108-108 |
| 76. | जब मैंने एक इंद्रधनुष देखा... | शाम्भवी, 4‘B’ | 109-110 |
| 77. | नदी | वेदांत सिंह, 4‘A’ | 111-111 |
| 78. | मैंने एक सपना देखा कि... | अदिबा फातिमा, 4‘B’ | 112-113 |
| 79. | मेरे सपने | अपराजिता गौरव, 4‘A’ | 114-115 |
| 80. | मैंने एक सपना देखा कि... | आराध्या सिंह, 4‘B’ | 116-117 |
| 81. | मेरी पहली रेल यात्रा | अंजना कुमारी, 4‘B’ | 118-119 |
| 82. | मैंने जब एक हाथी देखा | काव्या, 4‘B’ | 120-121 |
| 83. | मैंने एक सपना देखा कि... | अविका झा, 4‘B’ | 122-123 |

| Sr. No. | Title | Writer/Author | Page No. |
|---|---|---|---|
| 84. | मेरा पहला उपहार | जाएना जफिर, 4‘B’ | 124-125 |
| 85. | स्कूल | सेजल, 4‘A’ | 126-126 |
| 86. | मेरा विद्यालय | हर्षिता राय, 4‘A’ | 127-128 |
| 87. | मेरे पापा का सपना | आकृति कुमारी, 4‘B’ | 129-129 |
| 88. | जादुई बौना | वानीया, 4‘B’ | 130-131 |
| 89. | मित्रता | आद्या कुमारी, 5‘A’ | 132-132 |
| 90. | जब मैं पहली बार रेलगाड़ी में चढ़ा | सत्यम स्वराज, 5‘A’ | 133-134 |
| 91. | शिक्षा धन | Jai Kishan, 9‘A’ | 135-135 |
| 92. | राजू का जंगल घर | Aradhya Deep, 5‘B’ | 136-137 |
| 93. | लालची रवि | श्रेयसी, 5 | 138-139 |
| 94. | मेरी प्रिय सहेलियाँ | सोनाकक्षी शरण, 5‘B’ | 140-140 |
| 95. | मेरी खास सहेलियाँ | एकता राय, 5‘B’ | 141-142 |
| 96. | मैं जब क्रिकेटर बना | Md. Faizan Mallick, 5‘B’ | 143-143 |
| 97. | | रेहान, 5‘B’ | 144-144 |
| 98. | दोस्ती | जुवेरीया, 5‘B’ | 145-145 |
| 99. | एक असली सुपरहीरो | Pragyan Narayan, 5‘B’ | 146-147 |
| 100. | रोहन के दादाजी | | 148-148 |
| 101. | रूनझुन चली जंगल में घूमने | आध्विक राज सिन्हा, 5‘B’ | 149-150 |
| 102. | अंतिहीन गुफा | Pragya, 5‘B’ | 151-154 |
| 103. | पिंकु, पिंकी और दादाजी | सोनाकक्षी शरण, 5‘B’ | 155-157 |
| 104. | सोनू, हाथी और राजू | Arjun, 5‘B’ | 158-159 |
| 105. | रोहन के दादाजी | अतुल्य, 5‘B’ | 160-160 |
| 106. | कुनाल की डरावनी कहानी | | 161-161 |
| 107. | राहुल के दादाजी | अक्स राज, 5‘B’ | 162-162 |
| 108. | टोडो | आकांक्षा शर्मा, 5‘B’ | 163-167 |
| 109. | राहुल के पापा | नीदाल इमाम, 5‘B’ | 168-168 |
| 110. | जब हाथी को मिला इंसान का साथ | हर्ष राज, 5‘B’ | 169-170 |
| 111. | खरगोश और कछुआ की कहानी | माहम जावेद, UKG | 171-171 |
| 112. | निर्दय चायवाला | सत्यम, 5‘A’ | 172-176 |

# प्राक्कथन

हमारा यह मानना है कि विद्यालय केवल पठन–पठान का ही स्थान नहीं होना चाहिए, अपितु यह वह स्थान हो जहाँ बच्चों के सर्वांगीण विकास पर बल दिया जाए। इसमें लेखन कला का एक महत्वपूर्ण स्थान है, जो भाषा कौशल का एक माध्यम है। मुझे बहुत गर्व महसूस हो रहा है कि हम कक्षा 1 से 9 तक के युवा लेखकों द्वारा लिखी गई कहानी और कविताओं का संग्रह एक पुस्तक के रूप में आपके समक्ष रख रहे हैं। यह पुस्तक हमारे छात्रों की रचनात्मकता, कल्पनाशीलता और प्रतिभा का प्रमाण है। साथ–ही–साथ यह उनके भाषा की कला को भी प्रदर्शित करता है।

वास्तव में यह खास है, क्योंकि कहानियाँ और कविताएँ छात्रों ने अपने शब्दों में लिखी हैं, बिना किसी संपादन के। यह एक जानबूझकर लिया गया निर्णय था, क्योंकि हम अपने युवा लेखकों की कच्ची, बेलगाम रचनात्मकता को संरक्षित करना चाहते हैं। हमारा मानना है कि यह दृष्टिकोण न केवल हमारे छात्रों को लेखन जारी रखने के लिए प्रेरित करेगा, बल्कि उन्हें अपने काम में स्वामित्व और गर्व की भावना भी प्रदान करेगा।

इस पुस्तक का हर पन्ना छात्रों के कल्पनाशीलता व रोमांच से परिपूर्ण है। आप छात्रों द्वारा जीवंत किये गए नायकों से मिलेगें, जिसे बच्चों ने अपनी कल्पनाओं से जीवंत किया है और यह उनके रचनात्मकता को दर्शाता है। लेखन केवल एक कौशल नहीं है, बल्कि संचार, आत्म–खोज और सशक्तिकरण का एक साधन है।

हमें उम्मीद है कि यह पुस्तक हमारे छात्रों को, लेखन को बनाए रखने, अपनी रचनात्मकता का पता लगाने और कहानी कहने की कला विकसित करने के लिए प्रेरित करेगी। हम यह भी उम्मीद करते हैं कि यह पुस्तक माता–पिता और शिक्षकों को हमारे बच्चों में रचनात्मकता और आत्म–अभिव्यक्ति को पोषित करने में मत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर हमारे सभी युवा लेखकों को बधाई! इस रचनात्मकता को बनाये रखें। मुझे उम्मीद है कि इस तरह की लेखन कला आपके भाषा के विकास में मत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

अंत में विद्यालय के हिन्दी विभाग के शिक्षकों को बधाई जिन्होंने छात्रों की रचनात्मकता को लयबद्ध कर आपके समक्ष प्रस्तुत किया है ।

अनुपम मिश्र
प्राचार्य

# "समय"

Aarohi Sinha, 7 'B'

समय का जो रखता ध्यान,
जग में होता उसका मान।
समय को जो खोता है,
बाद मे सिर्फ वह रोता है।
समय कभी नही रुकता है,
चलता है, बस चलता है।
सफल वही यहाँ रहता है,
साथ समय के जो चलता है।
आखिर, समय का जो रखता ध्यान,
जग में होता उसका ही मान ।।

# ट्रेन का सफ़र

विवान पाण्डे, IX B

कुछ समय पहले की बात है, मैं ट्रेन से बोकारो जा रहा था छठ के लिए। ट्रेन में कई लोग बिना टिकट के चढ़े हुए थे और कर्मचारियों ने ऐसी भी काफ़ी कम करके रखा हुआ था। आखिरकार मैं बस यही कहना चाहूँगा की मेरे ट्रेन का सफ़र सही नहीं जा रहा था। इसी हलचल में मैंने एक नौ-दस वर्षीय बच्चे को ट्रेन में कई पैकेट चिप्स लेकर चढ़ते हुए देखा। उसे देख कर मुझे मेरा बचपन याद आ गया था। कैसे मैं भी यूहीं ट्रेन पर चढ़कर समान बेचता? मैं अपनी यादें जी ही रहा था कि बस वही बच्चा मेरे सामने आवाज़ लगा रहा था। मैंने उसे मेरी तरफ़ मासूम आँखो से देखते हुए देखा तो बस एक पैकेट खरीदलिया। वह बच्चा बस जा ही रहा था कि मैंने उसको बुलालिया। वह मुड़ा और कहा - "जी भईया?" उसका नाम पूछने पर उसने राहुल बताया कि वह दस वर्षीय है। मेरी उससे बात होने लगी और उसने बताया की वह दस वर्षीय है। मैंने जागरूकता से उससे पूछा कि राहुल तुम स्कूल क्यों नहीं जाते? इसका जवाब उसने दिया कि उसकी माँ बिमार है और उसके पास स्कूल जाने के लिए पैसे नहीं थे।

यह बात मुझे दिल पर लगी, लेकिन मैंने उसे हौसला न हारने के लिए कहा और बताया कि मैं भी ऐसे ही ट्रेन में समान बेचता था। रात में गरीबों के स्कूल जाता और ऐसे ही निरंतर अभ्यास के बाद मैं एक अफसर बन गया। राहुल ने उसे हौसला देने के लिए धन्यवाद कहा और आगे बढ़ गया। उसके जाने के बाद मैं बह यही सोच रहा था कि:

जहाँ ऐसे बच्चे भी इस दुनिया में अपना कठिन जीवन जी रहा है, इधर मैं एक कम ए.सी. के लिए दुखी हो रहा हूँ

इस तरह राहुल की बातों ने मेरे ज़िंदगी को और आत्मविश्वास से भर दिया था। वह आत्मविश्वास जो कभी न हार माने

सीख: हमें जो मिला है उससे खुश रहना चाहिए। लालच की कोई सीमा नहीं लेकिन जो मानव अपने आप को इस लालच से मुक्त करलेगा वही आगे चलकर सफ़ल होगा।

# चलो चलते हैं

Raj Kang, VIIB

चलो चलते हैं,
एक इसी दुनिया होती,
जीस हम छोटे और
चीटी बरे तो फिर
हम ले जाता ते हाने
मल के, और वे लगाते
लक्ष्मन रेखा ; और हम
कहते छोर दो लेकी वे
सुन ना पाते ।
समय, को अगर हम पीछे कर सकते
तो हम अपनी गलतीया

# वृक्ष

पुष्कर कुमार, vii B

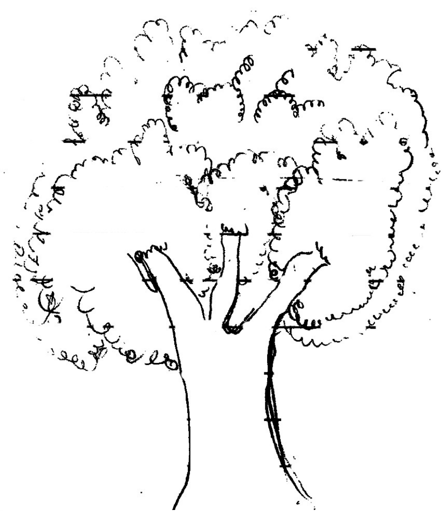

वृक्ष देते है छाया
जिससे मिलती पंछी को राहत,
वृक्ष हमे देते फल और देते ऑक्सीजन
जिससे हम रहते है जीवीत,
वृक्षों से बनते लकड़ी के समान
जिसका रोज इसतमाल करते हम,
वृक्ष को बचाएगे हम और
धरती को स्वस्थ बनाएगे हम ।

# जीवन का मार्ग

अक्षिता दिवाकर

चले जा रहे हैं, जीवन का मार्ग,
न रुकते हैं, फिर भी, कुछ कहने को तरसे।
हर मोड़ पर नए प्रश्नों का सामना
फिर भी दिल में प्रश्नों और उम्मीदों का मचलना।

जो खो गया है उसकी ओर ध्यान न दो
जो पाया है वह है अनमोल, लाए
मुश्किलों भूलो, जिंदगी को आगे बढ़ाओ
अपनी मंजिल को पाओ
व्यर्थ का समय न गवाओ।

# कौन

अनिकेत

अगर न होता सूरज, दिन को
सोने-जैसा चमकाता कौन?

अगर न होता साफ नदियाँ,
दुनियाँ की प्यास बुझाता कौन?

अगर न होते पेड़, भला फिर
हरियालि फैलाता कौन?

अगर न होते बादल, तो पानी,
फीर बरसाता कौन?

अगर न होता हवा तो,
गरमी में राहत दीलवाता कौन?

# पानी का नलका

गर्मी के संग हो जाती है
शुरू एक और कहानी एक
बूँद के लिए लोग तरसते हैं
पानी के लिए तड़पते हैं जीवन
रपाक है यह पानी हमें
इसे बचाना है व्यर्थ
नहीं गवाँना है पानी को
सुरक्षित करें जीवन को
सुरयाट करें

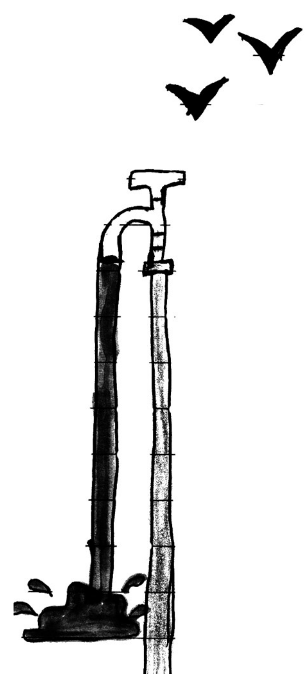

# प्रकृति की झलक

आशिंका राज, 7th Beta

वो हवाएँ जो सुनती हैं हमारी बात
दिल की खामोशी को समझती हैं रात।
चाँद की रोशनी में बसी है एक धड़कन
जो कभी भी नहीं होती है थमकन।

सपने हैं छोटे पर दिल में बड़े
उन्हें पूरा करने का हौसला है अनमोल।
राहों में काँटे हो या हो मुश्किलें कई
मन में जोश हो तो कोई नहीं जाई।

चलो बढ़ते रहें रुकने का नहीं नाम
हर कदम पर नया आसमान मिले काम।
आशा और विश्वास से संजीवनी बनाएं
सपनों को साकार करके नए रास्ते अपनाएं।

# सोनू हाथी और राजू

आद्या। क्लस. VIIB

सोनू हाथी एक जंगल में रहता था। वह बहुत दयालु और वफादार था। एकदिन, सोनू ने एक छोटे लड़के को देखा, जिसका नाम राजू था। राजू जंगल में खो गया था। राजू की आँखों में आंसू थे, और वह बहुत डरा हुआ था। सोनू ने राजू को अपनी सूँड से पकड़कर अपने पास खींच लिया और उसे शांति से बैठने को कहा।

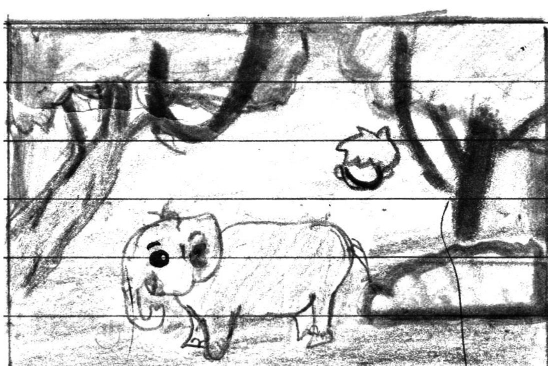

सोनु और राजु ने मिलकर जंगल के कई खतरों का सामना किया।

सोनु ने राजु के कई राज़ भी सिखाए।

जब वे जंगल से बाहर निकले, तो राजू के माता-पिता ने उसे देखा और बहुत खुश हुए।

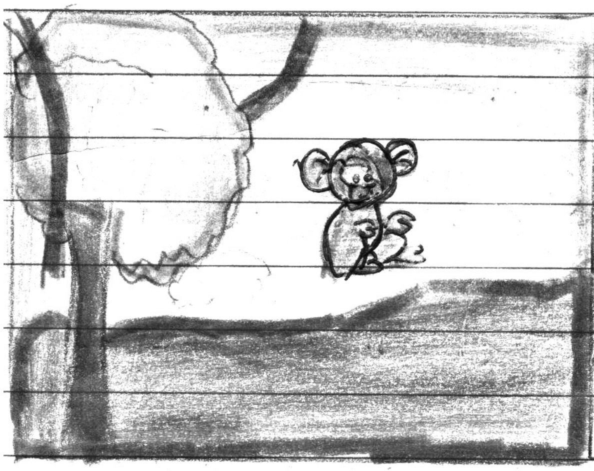

सोनु और राजू ने एक दूसरे को अलविद। कहा और वादा किया कि वे फिर से मिलेंगे। इसके बाद सोनू और राजू अच्छे दोस्त बन गए। सोनु ने राजु को जंगल के बारे में बहुत कुछ सिखाया।

सोनु और राजू की दोस्ती हमें यह सिखाती है की सच्ची दोस्ती और मदद करने की भाव हमें जीवन में सफलता की ओर ले जाती हैं

# वह दिन मैं फ़िर भूल नहीं सकता।

Alfiya Atiq VI B

मैं अपना नाम नहीं बताना चाहता पर यह ज़रूर बताऊँगा कि मैं पंजाबी हूँ और अम्रितसर का रहने वाला, आप सब जो मेरी कहानी पढ़ रहे हैं, सोच रहे होंगे कि पंजाबी होकर मुझे हिंदी ऐसे बोलने/लिखने आती है, तो यह जान लीजिए कि मैं तो बस एक कल्पना हूँ उस लेखक के मन की जो यह सब लिख रहा है। पंजाबी भी हिंदी बोल लेते हैं, ऐसे बहुत हैं उनमें जो हिंदी लिखना-पढ़ना सब जानते हैं। तो मैं लेखक के मन की बात कर रहा हूँ, जो कि उसके मन का एक छिपा हुआ राज़ है, आप सब ध्यान से सुनिए/पढ़िए। मैं वह दिन फ़िर कभी भूल नहीं सकती, उस दिन जब गूगल पर मैंने यह देखा कि एक इंसान जो कि स्वस्थ हो और जिसकी हैल्थ काफ़ी अच्छी हो, वो, एक साइंटिफ़िक स्टडि के अनुसार, 120 से 150 साल के बीच ज़िंदा रह सकता है, जो कि एक खबरी भी है। अब यही कहना है कि मेरी इच्छा है कि काश मैं खुशकिस्मत हूँ और 120 या 150 साल तक जीना मेरे भाग्य में हो, मुझे मौत का एक डर है, कि अगर, मैं मर गया तो इस सुंदर संसार की और प्रकृति की सुंदरता नहीं देख पाऊंगा

और इस संसार में फ़िर घूम नहीं सकूंगा, लोगों को न देख पाऊंगा, और भी ऐसी है वजहें हैं कि मैं कभी न मरूं, मैं उम्मीद करूंगा कि विज्ञान एडवांस हो जाए इस मामले में ताकि इंसान को 1000 साल तक जीने का या अमर हो जाने का कोई टेकनोलोजिकल और एडवांस उपाय मिल जाए, हो सकता है कि यह भविष्य में संभव हो जाएगा और मैं उम्मीद भी यही करता हूँ क्योंकि मुझे मौत से ही बहुत डर लगता है। यही वह राज़ था जो बताना था आप सबको कि मैं मौत से सबसे ज़्यादा डरता हूं, आप यह कहानी पढ़ें और इस बारे में अपनी राय सोचें, मैं ने भी अपनी राय ही दी है और अपने भय/डर के बारे में भी बता दिया है। बस यही कुछ है और कुछ नहीं मन में लिखने के लिए, अलविदा सभी को।

"भुतिया महल का खजाना"

Karan Kumar 6 a

एक बार कि बात है, एक छोटा सा गाँव था। वह एक बड़े से जंगल के बिचों-बीच था। उस गाँव में एक लड़का रहता था, जिसका नाम राहुल था। वह बहुत ही साहसी तथा जिज्ञासु था। एक दिन, राहुल गाँव में एक चौराहे के पास अपने दोस्तों के साथ खेल रहा था। उसने सुना कि गाँव के पास एक पुराना और खंडहर हो चुका महल था। लोग कहते थे कि उस महल में भूत रहता है। राहुल को यह बात सुनकर

बहुत उत्सुकता हुई, और वह अपने दोस्तो को साथ लिए उस महल में चला गया। जब वह अंदर गया तो उसे कुछ अजीब नहीं लगा। लेकिन जब वह अपने दोस्तों के साथ घुम रहा था तभी उसने एक कमरे में पुरान संदुक पाया। उस संदुक में एक पुराने खजाने का नक्शा था। उन लोगों ने उस नक्शे का पालन किया। और आखिरकार उन्होंने वह

खजाना मिल गया। राहुल और उसके दोस्तों ने उस खजाने को गाँव के लोगो बीच बाँट दिया।

- करण कुमार

सीख:- हमें अपने विशेषताओं को पहचानना चाहिए तथा दुसरों के हित के लिए उसका लाभ उठाना चाहिए

# खुश या दुखी लेकिन एक ही चेहरा

शान शर्मा 6th Alpha

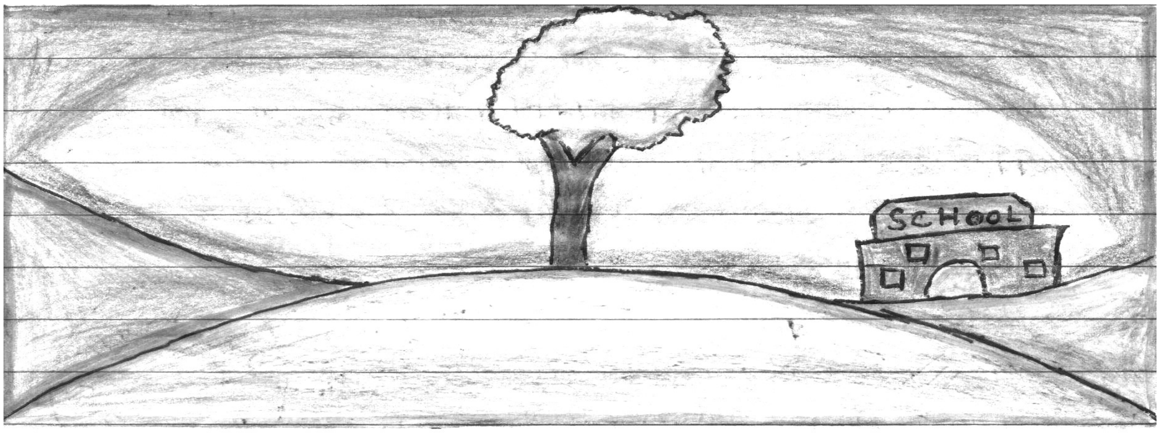


शीर्षक:

मेरे जीवनं से संबंधित यह बातें हैं जो मेरे मन में हैं। आज मैं उसें एक कहानी का रूप दे रहा हूँ।

आज हमारा किरदार हमें जीवन की कुछ सच्चाई के बारे में बताना चाहता है। आज फ्रेंडशिप डे है और स्कूल में हर कोई जश्न मना रहा है और आनंद ले रहा है, उसी समय मैदान में ईशान एक पेड़ के नीचे बैठा है और वह गहराई से सोच रहा है। ईशान दूसरों से बहुत अलग है और वह बुद्धिमान है। उसके क्षेत्र के लोग उसे घोस्ट_ऑफ_स्पार्टा कहते हैं, वह सभी के आसपास खुश रहने की कोशिश करता है लेकिन साथ ही वह खुद को दुनिया का सबसे बदकिस्मत व्यक्तिमानता है, क्योंकि भगवान ने उसे एक प्रतिभाशाली दिमाग दिया है लेकिन उसे ऐसे लोग नहीं दिए जो उसे समझ सकें और उसकी बात सुन सकें। वह बहुत दुखी होता है जब उसकी कोई नहीं सुनता है, उसे अनदेखा करते हैं, उसके सामने एक खाली चेहरा बनाते हैं, और जब

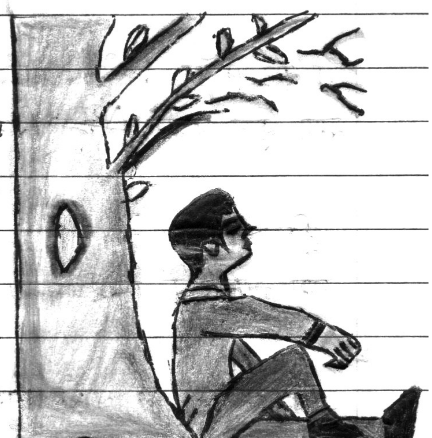

लेकिन ईशान का व्यवहार पूरी तरह बदला हुआ है क्योंकि आमतौर पर वह खुश रहता है लेकिन आज गहरे दुख में है जैसे ~~वह~~ उसका वास्तविक व्यक्तित्व है। उसके छोटे भाई जैसे सबसे अच्छे दोस्त ने उससे पूछा, क्या हुआ? चलो सब खेल रहे हैं! लेकिन ईशान ने कहा, चलो इस शांतिपूर्ण वातावरण के साथ दुनिया को एक अलग तरीके से देखते हैं। फिर वह अपने भाई जैसे दोस्त को उसके साथ बैठने के लिए कहता है। उसका दोस्त कहता है कि चलो एक छोटा सा खेल खेलते हैं, इसमें हम दोनों एक सिक्का उछालते हैं और फिर जिसकी बारी आती है उसे जो भी पूछेंगे सच बताना होता है। ईशान इससे सहमत हो जाता है और खेल शुरू हो जाता है। सबसे पहले ईशान की बारी आती है।

सिक्के पर गुजराती भाषा में लिखा है

"उसका दोस्त पूछता है:
"मेरे अलावा तुम्हारा सबसे अच्छा दोस्त कौन है?"

ईशान उत्तर देता है :-
"तुम्हारे अलावा मेरा सबसे अच्छा दोस्त आईना है क्योंकि जब मैं रोता हूं तो वह मुझ पर हंसता नहीं है या जब मैं मजाकिया चुटकुले बनाता हूं और मैं हंसता हूं, तो वह मुझे अकेला नहीं छोड़ता है।

दो बार टॉस करने के बाद ईशान की बारी फिर आई तो उसके दोस्त ने पूछा।
"क्या तुम कभी ~~किसि~~ किसी के लिए रोए हो?"

ईशान उत्तर देता है :-
"उस व्यक्ति के लिए कभी मत रोओ जो तुम्हारे आँसुओं की कीमत नहीं जानता।

जब ईशान की बारी फिर से आई तो उसके दोस्त ने पूछा।
"कि तुम्हें किस समय कहीं भी घूमना पसंद है?"

ईशान उत्तर देता है :-
"मुझे बारिश के समय कहीं भी घूमना अच्छा लगता है क्योंकि उस समय कोई भी मेरे आँसु नहीं देख पाता।

जब ईशान का दोस्त खेल का आखिरी सवाल पूछता है तो ईशान का जवाब सुनकर वह हैरान रह जाता है।
"ईशान का दोस्त पूछता है की।
"तुम सबसे अलग क्यों हो?"

ईशान उत्तर देता है :-
"मैं डिसोसिएटिव आइडेंटिटि डिसऑर्डर से पीड़ित हूँ और मैं ऑटोफोबिया से भी पीड़ित हूँ जो मुझे रात में शांति से सोने नहीं देता है, जब लोग मेरे साथ से काम रखने के लिए कहते हैं या हमेशा मुझे नकरात्मक बताते हैं जब मैं बात करना चाहता हूँ तो मुझे असहाय या अकेला छोड़ देते हैं, तो मुझे बहुत सारे बुरे सपने आते हैं; जो मुझे अपना जीवन शांति से जीने नहीं देते हैं, इसलिए मैं बस यह सुनिश्चित करना चाहता हूँ कि किसी को भी मेरा तरह पीड़ित न होना पड़े और ऐसा नरक जीवन न जीना पड़े और यही कारण है कि मैं हमेशा सभी के आसपास खुश रहने की कोशिश करता हूँ"।

अंत में ईशान के दोस्त को एहसास हुआ कि हमें लोगों को उनके चेहरे से नहीं आंकना चाहिए क्योंकि इस दुनिया में हर किसी के दो चेहरे और दो मूल्य हैं।

# ★ मीरू और उसकी ईमानदारी ★

Vagisha Kumar, 6B

एक बार की बात है, एक छोटा सा खरगोश जिसका नाम मीरू था। वह बहुत शरारती था और हमेशा इधर-उधर कूदता रहता था। एक दिन मीरू को एक बड़ा सा गाजर का खेत दिखा वह बहुत खुश हुआ और खेत मे कूदने के लिए चला गया।

तभी खेत का मालिक आया और बोला, "अरे छोटे खरगोश ये मेरा खेत है। तुम इसमें कूद क्यों रहे हो?" मीरू डर गया लेकिन उसने हिम्मत जुटाकर कहा "मुझे बस एक गाजर चाहिए, मुझे बहुत जोर से भूख लगी है।" मालिक हँसकर बोला "ठीक है, पर अगली बार बिना पूछे मत आना।"

मीरू ने धन्यवाद कहा और गाजर खाते-खाते घर लौट आया। रास्ते में उसने सोचा कि अगर मैं ईमानदारी से काम करूंगा तो कभी डरना नहीं पड़ेगा। उस दिन से मीरू ने शरारते कम कर दी और दूसरों की इजाजत लेकर ही चीजें लेने की आदत डाल ली और तब से मीरू सुधर गया था।

# जंगल की यात्रा

Priyanshu Kumar VI B

एक बार की बात है, एक गांव से दूर एक शहर था उस शहर में एक विद्यालय था। उस विद्यालय के शिक्षक और शिक्षका ने एक यात्रा पर जाने का फैसला किया। यात्रा जंगल का था उन सब ने अगले महिने 14 नवंबर को जाने का फैसला किया उस दिन बाल दिवस था। शिक्षक ने तुरंत अपनी कुर्सी से खड़ा हो कर कहा की बच्चों को अच्छा तोहफा भी मिल जाएगा और यात्रा का यात्रा भी हो जाएगा। पर वह इस बात से अनजान थे कि जंगल का यात्रा खतरनाक भी हो सकता हैं।

फिर कुछ दिन बितने के बाद यात्रा पर जाने का दिन आया सभी बच्चें बहुत खुश थे। सभी बच्चे बस पर बैठ गए थोड़ी देर में बस यात्रा पर जाने के लिए निकल गई कुछ देर के बाद सभी बच्चे वहाँ पर पहुँच गएँ जंगल में पहले तो तरह-तरह के मासूम जानवर देखे पर जैसे ही कुछ दूर पहुँचे तभी वहाँ पर झाड़ी हिलने की आवाज आई फिर तभी झाड़ी में से शेर बाहर निकला सभी शिक्षक और बच्चे उसे देख कर डर गए। शेर ज़ोर-ज़ोर से दहाड़ने लगा। शेर को दहाड़ता देख कुछ बच्चे रोने भी लगे थे। तभी एक शिक्षक ने तुरंत संरक्षक टिम को फोन किया उन्होंने उन से बात की उन्होंने कहा कि वह थोड़ी देर में वहाँ पहुँच जाएगें। तभी शेर बस के उपर चढ़ कर दहाड़ने लगा। तभी कुछ देर के बाद संरक्षक टिम की गाड़ी वहाँ पर पहुँच गई। उन्होंने शेर को बेहोशी की गोली मार कर उसे पकड़कर दूसरे जंगल में छोड़ दिया जहाँ कोई ना जाता हो और सब शिक्षक और बच्चे बच गए।

# मिट्ठु की नई दुनिया

Kumari Bhawna 6 'Beta'

एक बार की बात है, एक छोटा तोता था जिसका नाम मिट्ठू था। मिट्ठु बहुत जिज्ञासु था और दुनिया को जानने की इच्छा रखता था। एक दिन, उसने सोचा कि क्यों न अपने घर से बाहर निकल कर दुनिया देखी जाए।

मिट्ठु ने उड़ान भरी और एक हरे-भरे जंगल में पहुँच गया। वहाँ उसे बहुत से नए दोस्त मिले। सबसे पहले, उसकी मुलाकात एक खरगोश से हुई, जिसका नाम गोलू था। गोलू ने मिट्ठु को जंगल के बारे में बताया और दोनों ने मिलकर बहुत मज़े किए।

कुछ दिनों बाद मिट्ठु को एक और नया दोस्त मिला गिलहरी जिसका नाम मिल्लु था। मिट्ठु को पेड़ों पर चढ़ना सिखाया और उन्हें जंगल की नई-नई बातें बताई। मिट्ठु ने सीखा कि नए अनुभव और दोस्ती जीवन को कितना रोचक बना देते हैं।

इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि हमें हमेशा नए अनुभव के लिए तैयार रहना चाहिए और दोस्ती को महत्व देना चाहिए।

# दयालु चिड़िया

Md. Tahmeed Alam - VI B

एक समय की बात है। एक बंदर पेड़ पर बैठा था वहाँ एक चिड़िया का घोंसला भी था और बारीश हो रही थी बंदर ने जब देखा तो उसे लगा कि वो अजला पत्थर है। तो उसने एक उठाया और घोंसले में फेंक दिया वो अंडा किसी और चिड़िया के घोसले मे चला गया जब बारीश खतम हो गई तो जिस चिड़िया के घोंसले में वो गिरा था उसी चिड़ीया के घोसले मे कुछ और अंडे थे। जब वो चिड़ीया आइ तो वो उसे अपना अंडा समझ कर उसको ध्यान रखने लगी कुछ दिन बाद जब वो ~~अंडे~~ अंडो बहार आया तो वो बाकी बच्चो से अलग दिख रहा था। तभी वो चिड़िया उसको अपना बच्चा समझ कर उसे पालने लगी कुछ साल बाद जब सब बच्चे बड़े हो गए तो सब उतना उपर नही उड़ पते पर अलग वाली चिड़िया बहुत उपर उड़ रही थी। जब चिड़िया ने देखा की वो बहुत उपर उड़ रहा है तो उसने बोला ज्यादा उपर मत जाओ। जब वो एक दिन उड़ रही थी तो उसकी असली माँ ने देखा तो वो समझ गई कि वह उसके बच्चे मे से एक है। जब वो उसके पास गई तो दोनों एक जैसे दिख रहे थे। जब उसने अपनी असली माँ को देखा तो वो भी सारी बात समझ गया। वो अपने घर वापस चला गया। परन्तु वो दोनों चिड़ियों की देख भाल करता था। क्यों कि उसकी पहले वाली माँ के सारे सरे बच्चे उसे छोड़ कर चले गए थे।

इस कहानी से हमे यह सीख मीलती है की किसी को दुख मे देखा तो उसकी मदद करो।

# अंतहीन दहलीज़

सांघवी गुप्ता 6 B

गहरी रात थी। चारों तरफ घना अंधकार फैला हुआ था। गाँव के बाहर एक पुरानी हवेली थी, जिसे "अंतहीन दहलीज़" कहा जाता था। यह हवेली किसी भूल-भुलैया से कम नहीं थी। कहा जाता था कि जो भी इस हवेली में गया, वह कभी वापस नहीं लौटा।

गाँव के एक युवक, निखिल, को भूत-प्रेत पर यकीन नहीं था। उसे लगा कि ये सब अंधविश्वास है। उसके दोस्तों ने उसे हवेली के अंदर जाकर रात बिताने की चुनौती दी। निखिल ने हँसते हुए कहा, "डर केवल कमजोर लोगों के लिए है। मैं कल रात इस हवेली में जाकर दिखाऊँगा कि वहाँ कुछ नहीं है।"

अगली रात, निखिल लालटेन लेकर हवेली के गेट पर पहुँचा। गेट पर लगा जंग खाया ताला अपने आप खुल गया। ठंडी हवा का झोंका आया, मानो हवेली उसे अंदर बुला रही हो। अंदर का माहौल सर्द और भयानक था। दीवारों पर अजीब तस्वीरें थी - आँखों जैसी आकृतियाँ, जो निखिल को घूर रही थीं।

निखिल ने जैसी ही दहलीज़ पार की, गेट अपने आप बंद हो गया। उसने पीछे मुड़कर देखा, लेकिन वहाँ केवल अंधेरा था। उसकी लालटेन की रोशनी धीमी होने लगी। तभी उसे महसूस हुआ कि कोई उसके पीछे चल रहा है। उसने मुड़कर देखा, लेकिन वहाँ कुछ नहीं था।

अचानक, हवेली में एक धीमी आवाज़ गूँजने लगी, "तुमने मेरी दहलीज़ पार की है... अब तुम कभी बाहर नहीं जा सकोगे।" निखिल का दिल तेज़ी से धड़कने लगा, वह बाहर भागा, लेकिन हर बार वह उसी दहलीज़ पर लौट आता।

अब हवेली ने अपना असली रूप दिखाना शुरू किया। सीढ़ियाँ अपने आप घूमने लगीं। दीवारों से खून टपकने लगा। और उस खून से लिखा हुआ था, "यहाँ से निकलने का कोई रास्ता नहीं है।"

निखिल ने अपने साहस को संभालते हुए कहा, "कौन हो तुम? मुझे क्यों रोक रहे हो?"

एक भयानक परछाई उसके सामने प्रकट हुई। उसकी आँखें आग की तरह जल रही थीं। उसने कहा, "मैं इस हवेली का रक्षक हूँ। यहाँ जिसने भी मेरी शांति भंग की, उसे मैंने इसी दहलीज में कैद कर लिया।"

निखिल ने डरते हुए पूछा, "क्या मै यहाँ से बाहर जा सकता हूँ?"

परछाई ने कहा, "अगर तुम अपनी सबसे बड़ी गलती को स्वीकार करोगे और सच्चाई का सामना करोगे, तो शायद यह दहलीज़ तम्हें मुक्त कर दे।"

निखिल ने कहा, "मैंने अपने स्वार्थ के कारण दूसरों का मजाक उड़ाया है, उनकी भावनाओं को ठेस पहुँचाई है।"

परछाई ने कहा, "सच्चाई स्वीकारने के लिए साहस चाहिए। लेकिन हर गलती की सजा होती है। अब तुम्हें भी भुगतना होगा।"

तभी निखिल का शरीर ठंडा होने लगा। उसने देखा कि उसकी परछाई दीवार पर खिंच गई और हवेली का हिस्सा बन गई। अब निखिल भी उन गुमशुदा लोगों में शामिल हो गया, जो इस हवेली का राज़ बनकर हमेशा के लिए खो गए।

अगले दिन, गाँववालो ने देखा कि हवेली की खिड़कियों से एक नई परछाई झाँक रही थी। वह परछाई निखिल की थी।

संदेश:

अहंकार और गलतियों का सामना करने से पहले उनकी सजा के लिए तैयार रहना चाहिए।

# कृष्णा का चमत्कार

Harshit Kumar VI Beta

एक रामपुर नाम का एक गाँव था। वहाँ पर कृष्णा भगवान की बहुत पूजा होती थी। एक बार जन-माष्टमी का दिन था। उसी गाँव मे एक गरीब बूढ़ी अकेले रहती थी। जनमाष्टमी के दीन वह बूढ़ी औरत कृष्णा भगवान के लिए थोड़ा सा माखन लेकर खिलाने जाने कि तैयारि कर रही थी। उसी समय उस औरत के घर का दरवाजा खटक-खटकाया, उस औरत ने दरवाजा खोला। दरवाजे पर एक गरिब भिखारी था, उसने कुछ खाने के लिए माँगा उस औरत के पास बस थोड़ा सा माखन था। उसने वह माखन उसे खाने को दे दिया। उसे खाने के बाद उसने एक गिलास पानी माँगा, उस बूढ़ी ने कहा, 'मैं पानी लेकर अती हूँ तुम आकर अंदर बैठ जाओ' वह भिखारि अंदर आकर बैठ गया। जैसे ही वह बूढ़ी पानी लेकर आई तो वह आदमी गायब था तब बूढ़ी ने सोचा कृष्णा भगवान स्वंय मेरी परीक्षा लेने आए थे।

# फूल

अनुष्का सिंह 7 (A)

फूलों की दुनिया,
रंगों की बहार।
खुशबू और सुंदरता,
फूलों की अद्भुत दुनिया।
गुलाब, कमल और गेंदा,
हर एक फूल अपनी कहानी।
प्रकृति की सुंदरता,
फूलों में बसी हुई है।
फूलों की खुशबू,
हमारे दिल को खुश करती है।
फूलों की सुंदरता,
हमारी जिंदगी को रंगीन बनाती है।
फूलों की दुनिया,
एक अनमोल उपहार।
हर पल खुशियाँ देती,
फूलों की यादें, हमेशा हमारे साथ रहती हैं।

# शिक्षा का महत्व

'नव्या' 7 'A'

जीवन का आधार है शिक्षा
खुशहाली का भण्डार है शिक्षा
बिन शिक्षा सब सूना-सूना,
जैसे नभ में चमके दूना
शिक्षा से मिलती है राहें
सपने सच करने की चाहें

यह है सफ़लता की पहली उड़ान
जो जीवन को सार्थक करती
और हमें देती एक नई पहचान

हर कठिनाई में राह दिखाती
सफ़लता का वह मार्ग बनाती
करती हमारे सपनों को साकार
और हमें देती एक नई उड़ान।

# पर्यावरण हूँ मैं

Rudraksh VII A

पर्यावरण हूँ मैं,
तुम सब का जीवन हूँ मैं।
मेरे बिना रह न पाया कोई,
और मेरे साथ चल न पाया कोई।

पर्यावरण हूँ मैं,
तुम सब का संचालक हूँ मैं।
अगर तुम मुझे नष्ट करोगे,
तो तुम भी कष्ट सहोगे।

पर्यावरण हूँ मैं,
धरती की साँस हूँ मैं।
मेरी आशा है तुम से,
उठाओ बीज और छोड़ो कुल्हाड़ी अपने हाथों से

# प्रकृति का सौंदर्य

Ragad Eyaz, 7Beta

प्रकृति का सौंदर्य, असीम है,
हर कण में जीवन बसता है।
पहाड़ों की ऊँचाई, नदियों की गहराई।
जंगलों की हरियाली, फूलों की बहार।

सूर्य की किरणें, चाँदनी रातें।
तारों की चमक, बादलों की छाया,
बारिश की बूंदें, हवा का झोंका।
प्रकृति का संगीत, सुनाई देता है।

पेड़-पौधे, हरे-भरे, पशु-पक्षी मस्ती हैं करते,
प्रकृति का संदेश, सबको सिखाता।
प्यार, करुणा, दया, सहयोग,
इंसानियत का पाठ पढ़ाता।

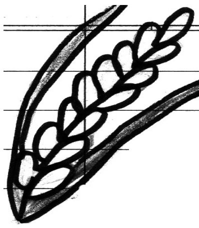

# अन्न दाता

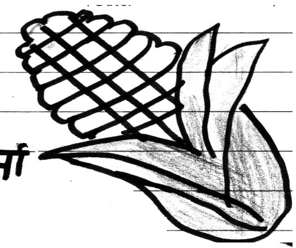

दिशा शर्मा

अन्न दाता कहलाते हैं किसान,
सब को खाना खिलाते हैं किसान।

दिन रात मेहनत कर के उगाते हैं फसल,
पर हमको भूखा नहीं रखतें हैं किसान।

धूप, बारिश चाहे हो तुफ़ान,
मेहनत करते रहते हैं ये किसान।

पूरे देश को हैं खिलाते,
पर सबसे कम हैं ये कमाते।

मेहनत किसान की, कैसे भूल रहें हैं
कर्ज़, गरीबी, भूखमरी से तंग हो किसान मरे।

फिर भी वह थककर सोता नहीं,
रोज़ सबेरे खेतों पर जाना भूलता नहीं।

आओ हम सब मिलकर करें सम्मान,
कभी न भूले हम किसानों का योगदान।

# संवाद:

MD AL HAMZA Ejaz Mollick, VII 'Alpha'

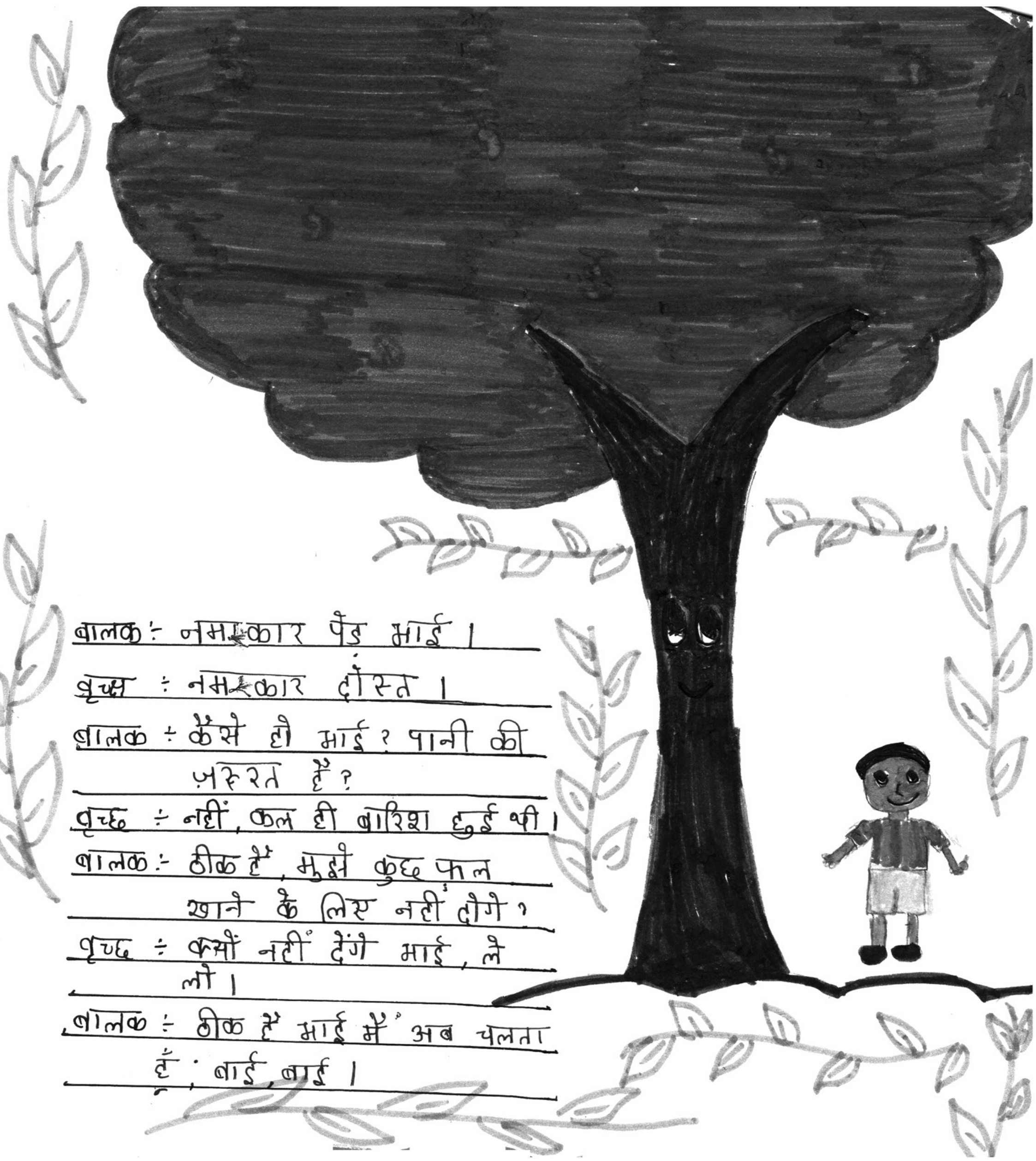

बालक :- नमस्कार पेड़ भाई।

वृक्ष :- नमस्कार दोस्त।

बालक :- कैसे हो भाई? पानी की ज़रूरत है?

वृच्छ :- नहीं, कल ही बारिश हुई थी।

बालक :- ठीक है, मुझे कुछ फल खाने के लिए नहीं दोगे?

वृच्छ :- क्यों नहीं देंगे भाई, ले लो।

बालक :- ठीक है भाई मैं अब चलता हूँ; बाई, बाई।

# आत्मविश्वास

संस्कृति गुप्ता VII बीटा

मेरा आसमां छीन गया तो क्या
मैं अपना खुद बना लूँगी
पर अपनी मंजिल में उड़ना कभी नहीं छोड़ूँगी

मेरे कदम हमेशा चलते रहेंगें,
जब तक है साँस।
हर मुश्किल से लड़ते रहेंगे,
जब तक है खुद पे विश्वास।

आसमान की ऊँचाई को छुना है मेरा सपना,
मेरा आत्मविश्वास कह रहा है बना ले इसे अपना।

विश्वास माँ बाप का था मुझसे
क्योंकि मैंने वादा कीया था उनसे

मुश्किल कैसी भी हो अपने,
आत्मविश्वास को खो नहीं सकती।
अपनी आँखो में कभी,
आँसु नहीं ला सकती।

अब अँधेरी रात हो या हो उजाला
हिम्मत नहीं हारेंगे क्योंकि, यह आत्मविश्वास है मेरा।

# "शिक्षक"

तलत परविन, 7-'B'

शिक्षक कौन हैं?
शिक्षक वो हैं
जो हमें चलना सिखाता है
गिर कर फिर से उठना सिखाते हैं
मुश्किल राह पार करना सिखाते हैं
जब हार कर आशा खो बैठते हैं हम,
तब हमें दिलासा दिलाता है।
समाज में, माँ-बाप के समान पद है इसका।
जिसकी एक चिख से दिल सहम जाता है,
उसे के एक प्यार भरे शब्द से दिल खुश हो जाता है।
आज जिससे डरकर हम स्कूल न जाने के सौ
बहाने ढूँढते हैं,
जब ये दिन चले जाएँगे
तब उन्हीं के पास वापस आने के सौ तरीके अपनाएँगे

# समय

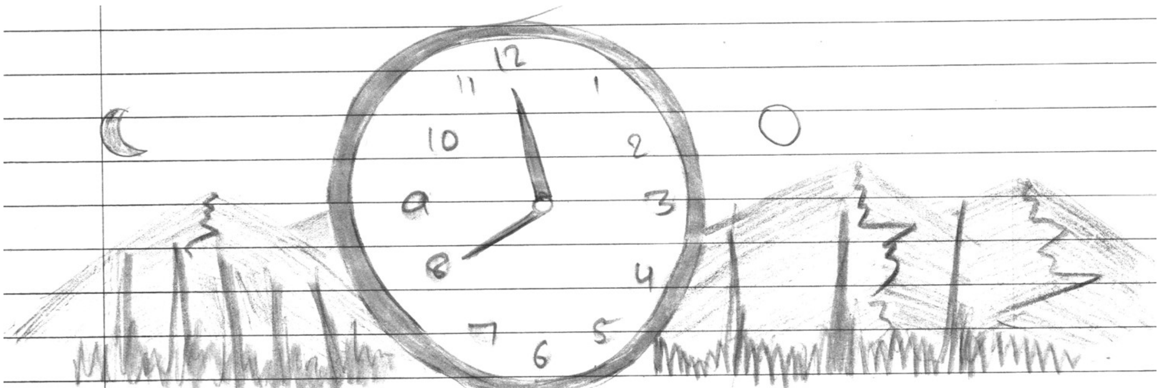

समय का जो रखता ध्यान
जग में होता उसका मान
समय को जो खोता है,
बाद में रोता रहता है।
समय कभी नहीं रुकता है
चलता है, बस चलता है,
सफल वही यहाँ रहता है,
समय के साथ जो चलता है
उसका जय, जय कार होता है।

# मूर्ख कौन
# नाविक या पंडित?

रुद्र आनंद 7B

एक पंडित को अपने व्याकरण ज्ञान पर बहुत घमंड था। जिससे भी मिलता, ज्ञान का पुलिंदा बांधने लगता। एक बार वह नाव से नदी पारकर दूसरे गांव जा रहा था। रास्ते में पंडित ने नाविक से पूछा - क्या तुमने व्याकरण पढ़ी है? नाविक बोला - पंडितजी, मेरी तो कोई पीढ़ि या अनपढ़ है। तब पंडित ने कहा - तुम मूर्ख हो। अपना आधा जीवन बर्बाद कर दिया। नाविक चुप रह गया। अचानक तेज तूफान आया और नाव डगमगाने लगी। नाविक ने पंडित से पूछा - महाराज, आपको तैरना आता है? पंडित ने घबराते हुए बोला - नही। नाविक बोला - पंडितजी, तब तो आपका पूरा जीवन बर्बाद होने वाला है, क्योंकि नाव डूब जाएगी। यह कहकर नाविक कूद गया। नाव पलटी और पंडित डूबने लगा। मदद की गुहार लगाने पर उसी नाविक ने पंडित को बचाया।

"तो मूर्ख कौन
नाविक या पंडित"?

नाव
9999999999

# माँ का स्नेह

तनिष्का मिश्रा 7 बीटा

माँ। मेरी प्यारी माँ, मेरी दुलारी माँ,
तेरी बातें हैं मिठास से भरी,
तेरे कंगन में लोरी है समायी
तेरे गोद में नर्माहट गुदगुदाए।

सारी परेशानियाँ मैं भूल जाऊँ,
जब तेरा हाथ सर पर आए।
तेरे खाने की खुशबू से पेट में चूहे दौड़ लगाएँ,
कड़वा करेला भी मीठा हो जाए,
दुनिया का सारा स्वाद तेरे हाथों में समाए!

लव, प्यार, खुशी का मतलब तुने ही सिखाया,
सारी मुश्किलों से तुने है बचाया।
गुरू की पहली भूमिका तुने निभाया,
जहाँ भी डर लगे तु आए बनके साया।

बचपन में उँगली पकड़कर चलना सिखाया,
जब उड़ने की बारी आयी तो पंख फैलाना सिखाया,
सच में माँ, तेरे रूप में भगवान उतर आया।
माँ! मेरी प्यारी माँ....!

# 'कान्हा'

रीशा कुमारी 7 Beta

जन्मे थे वो मथुरा में।
माखन उनको प्रिय था॥
ना जाने क्या सूझा उनको।
राधा की उन आखों में॥
प्रेम में वो तो लीन हुए।
राधा के सपनों संग वो
रातो में॥
कान्हा की थी राधिका।
खुद ब्रह्मा थे साक्षी॥
प्रेम का वो बड़ा बलिदान।
जब हस्तीनापुर चले हमारे
कान्हा जी॥

महाभारत के वो नायक थे।
अर्जुन के वो सारथी॥
पर क्या मिला उनको भेंट में।
सुनो जरा कतार में॥
राधा के संग मिली जुदाई
वो महाभारत की हुई लड़ाई॥
द्रौपदी का हुआ चीर हरण।
अभिमान्यु का अकाल मरण॥

# जीवन की सुंदरता

Divya Kumari Sec-B

सूरज निकला आसमान में।
रंग बिखरे हर जहाँ में,
चाँद भी मुस्काया रात में।
सपने आए हर बात में,
फूलो की खुशबू फैली हवा में।
मस्ती छाई हर रंग में,
जीवन का सफर है प्यारा।
हर मोड़ पर कुछ नया उजाला।

# फुटबॉल

श्री बालाजी 7(B)

इस खेल में होते हैं 11 खिलाड़ी,
एक की भी कमी हो तो बाकी 10 खिलाड़ियों
के लिए भारी।

गेंद पर हाथ लगाना सख्त मना है,
पैरों से मारकर इसे गोल तक पहुंचाना है।

समूह कार्य से जीत की राह बनानी,
साथियों को पास देकर चालाकी दिखानी।

गेंद को दुश्मनों से बचाकर, अपनी टीम को बढ़ाना,
मेल-जोल और मेहनत से खेल को जीताना।

# अपनी मंजिल पाओ

ANSHIKA KUMAR - 7 Beta

चीं- चीं करते आई चिड़िया
सुबह सवेरे जगाई दुनिया
नींदभरी आँखों से उठे हम सब
सूरज की किरणों में नहाए हम सब
और फिर बढ़ें अपने लक्ष्य की ओर
तराशें हमारे जीवन का मकसद

चलो, चलो उठो साथियों
खोजो अपने का मकसद
चमको तारों की तरह
अपने कदम बढ़ाओ
अपनी मंजिल पाओ
अपनी मंजिल पाओ --!

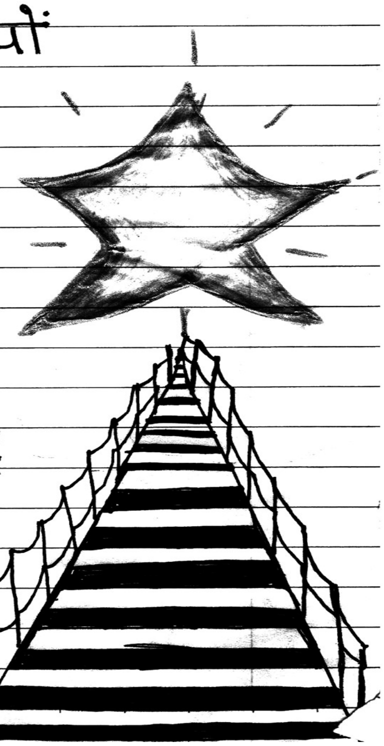

# घड़ी

रुद्र आनंद 7B

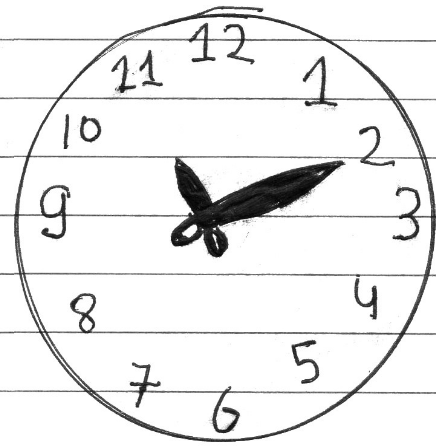


घड़ी है गोल
जिंदगी में उसका बड़ा है मोल।
घ से घड़ी
दिवाली में जलाते है लड़ी ||1||

दिन हो या रात
हमें समय बताता है।
कभी थकता नहीं
क्योंकि नई-नई बैटरी खाता है ||2||

दिवारों पे हमेशा है झूलता।
1 से 12 अंक उसमें।
तीन काटे के सहारे
दिन और रात घुमता है ||3||

घड़ी है गोल
जिंदगी में उसका बड़ा है मोल।
घ से घड़ी
दिवाली में जलाते है लड़ी ||4||

# मेरा भारत देश महान

मन्नत राज

मेरा भारत देश महान
मेरा भारत देश महान

अंग्रेज़ो ने भारत को जब
बनाया था अपना गुलाम,
मिलकर सबने लड़ी लड़ाई और
जीत लिया आज़ादी का संग्राम।

स्वतंत्रता पाकर नेहरू जी ने जब
संभाली थी इस देश की डोर,
लिख दिया संविधान देश का
देश चल पड़ा अम्बेडकर की ओर।

अतिथि को भी देव मानते
मिलता जहाँ बराबर सम्मान,
शांती का संदेश बतलाता
ऐसा मेरा देश महान।

जिस देश की मिट्टी से,
सोना उगाते किसान।
जिस देश की रक्षा,
करते हैं वीर जवान।
जिस मंगल ग्रह पर,
पहुँच गया अपना विज्ञान।

ऐसा भारत देश महान
ऐसा भारत देश महान

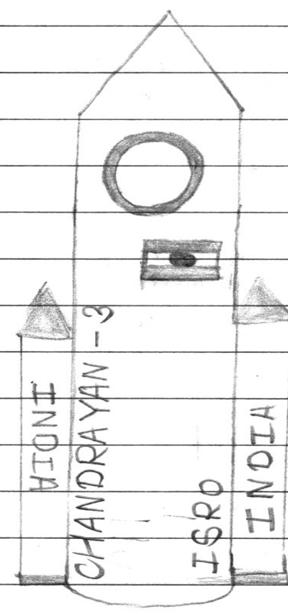

# छोटी सी आशा

Dakshina Anish VII B

छोटी सी लड़की थी वह,
सपने देखती बड़ी-बड़ी।

फोटोग्राफी की रानी मैं बनूँ,
दुनिया का हर पल देख सकूँ।

अपने दोस्तों को वह बताती,
अपने पंखों से वह उड़ना चाहती।

सपने देखना कभी मत छोड़ो,
दिन-रात मेहनत करते रहो।

एक ही मेरी आशा है,
जीवन की खूबसूरती के साथ जीना है।

जीवन की खुबसूरती के साथ जीना है,
जीवन की खुबसूरती के साथ जीना है....।

# संगति

ऐश्वर्या गौरव, 7B

किसी समय एक तरुवर ऊपर
चतुर काक एक रहता था।

सरलचित बतख भी एक
उसकी छाँव में पलता था।

पक्षी राज ने किया निमंत्रण
पक्षी गणों को एक समय।

चतुर काक के संग चला
वह सरलचित बतख निरभय।

कहीं राह में गोप दधी की
मटकी लिए हुए जाता था।

लालचवशवा कौआ दधी को
उड़-उड़ जा कर खाता था।

आहट पाकर तभी गोप ने
मुड़कर देखा खड़े-खड़े।

तो उसके पीछे वे दोनों
कौआ बतख दिख पड़े।

झट मटकी धर चला मारने
कौआ उड़ कर भाग गया।

निरअपराध बतख का केवल
गोप हाथ से प्राण गया।

दुर्जन कि संगति करने से
नर क्या-क्या फल पाता है।

कौआ, बतख, गोप कथा से
साफ समझ आ जाता है।

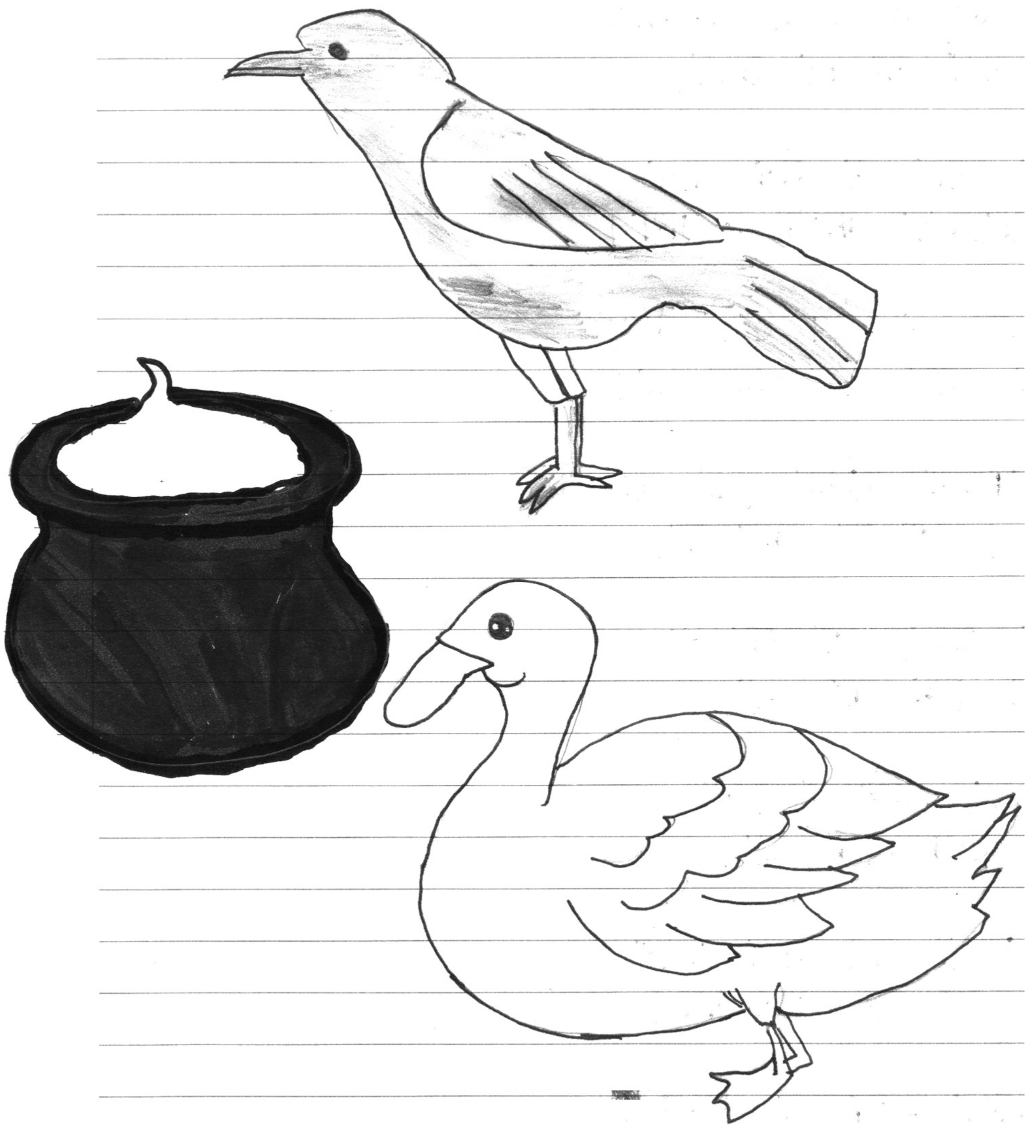

# कविता

Anant Prakash VII, Beta

मनुष्य का जीवन मानो थम सा गया है,
धुआँ फैला है हर तरफ,
साँसे भी हो गईं भारी।
धरती भी अब रो रही है,
आंसू हो गए खारी।
नदियाँ भी सिसकती हैं,
उनके गोद मे है गंदगी,
वृक्ष भी है चुप्प से,
जैसे खो गई हो नमी।
आओ मिलकर कुछ करें,
मंजर बदलें हम,
प्रदूषण को भगाए हम,
धरती को सुंदर बनाएँ।
जीवन की रक्षा करें!
प्रकृति को निखारें हम।

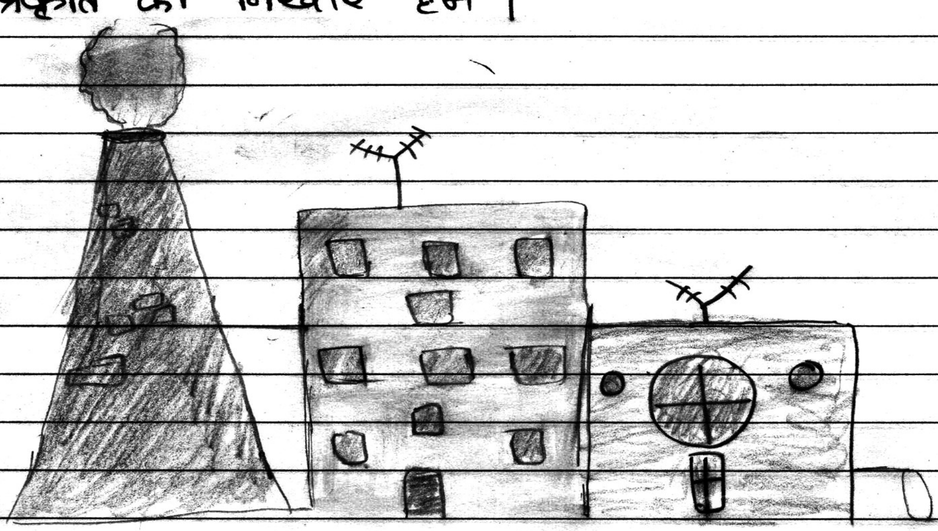

Ayaan Khalid 7B

हम कितने अजिब है, पता लगा लेते
है कुछ भी।

परिंदों से लेकर जानवरों तक, कोइ जिव
हम से ना बच पाते है।

असमानों के सितारों से लेकर जमिन
के हिरों तक हम सब पा लेते है।

जिस चिज़ के बारे मे जिज्ञासित
उसको पा कर जिते है।

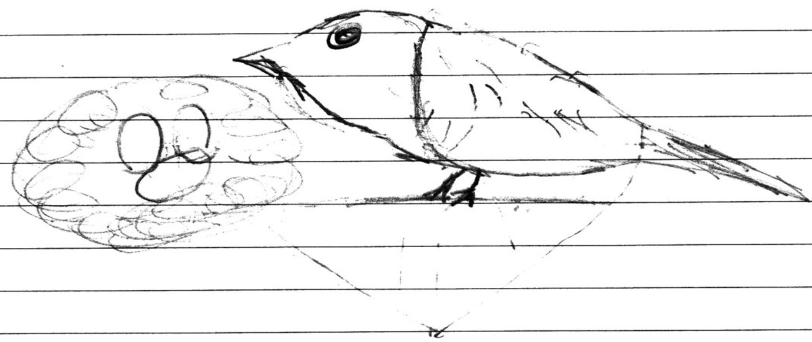

# अनोखा दोस्त

Aditi Anand 8 Alpha

एक छोटा सा गाँव था, जहाँ एक छोटी सी लड़की रहती थी जिसका नाम सवी था। सवी को पक्षियों से बहुत प्यार था। वह हमेशा उनके साथ खेलती रहती थी। एक दिन, सवी ने अपने बगीचे में एक छोटा सा पेड़ लगाई। उसने पेड़ के पास एक छोटा सा फीडर बनाया। वह पक्षियों को खाना खिलाने के लिए था। हर दिन उस फीडर में बीज डालती थी। धीरे-धीरे, पक्षी सवी के पेड़ के पास लगे और

उसके साथ खेलने लगे। सवी बहुत खुश थी और वह पक्षियों के साथ खेलती रहती थी। एक दिन, एक छोटा सा पक्षी सवी से कहा, "सवी तुमने मुझे और मेरे दोस्तों को खाना खिलाने के लिए यह फीडर बनाया है, इसके लिए धन्यवाद।" सवी ने कहा, "यह तो मेरे लिए एक सुखद अनुभव है कि तुम लोग मेरे साथ खेलते हो।" पक्षी ने कहा, "सवी, तुम एक अच्छी दोस्त हो और हम तुम्हारे साथ हमेशा खेलना चाहते हैं।" सवी और पक्षी दोस्त बन गए। उसके बाद से वह हमेशा साथ मे खेलने लगे।

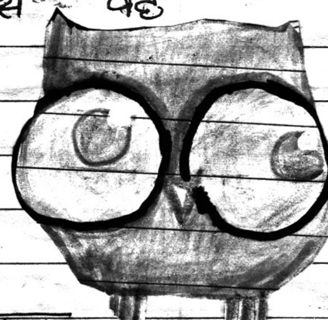

सीख

↳ इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि, कभी भी जानवरों एवं को अपने जरूरतों के हिसाब लिए नहीं मारना चाहिए और उन्हें बचाना चाहिए।

# स्क्वीड गेम

YASh Sharma VIII A

जापान में सन 1928 - 1950 के बिच में एक एक खेल खेला जाता था जिस में छह खेल खेले जाते थे। उन छह खेलों का नाम था:- रेड लाइट अन्ड ग्रीन लाइट, डालगोना, मीन्गल, टग ऑफ वो लाइटस आउटस, मारबल। हर एक खेल की एक कीमत होती है। जैसे की सारे छह खेलो में से जितने पलेयरस ऐलीमीनेट होते हैं उतना जितने वालो का पेसा बढ़ता हैं। इन खेलो में ऐलीमीनेट होने का मतलब जान से मरना होता है। पर लेकिन अगर सारे 456 खीलाडी खेलना नहीं चाहते तो जो भी खीलाडीया मरे हैं। उनके माता - पीता को सारे पेसे बाट दीये जाए गे।

सीख-हमें लालज नहीं रखना चाहिए, हमें दूसरें की मदत करनी चाहिए।

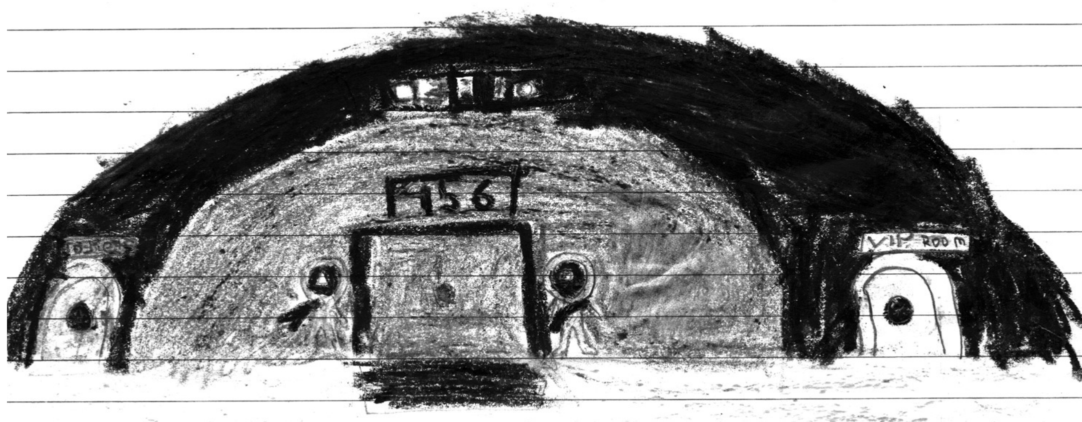

# एक अनोखी घटना

सपना कुमारी 8 'A'

एक छोटा से गाँव में एक लड़का रहता था, जिसका नाम रोहन था। वह एक दिन जंगल में घुमने गया, जहाँ उसने एक विशाल वृक्ष देखा, उसने आराम करने का सोचा, वह वृक्ष के नीचे जा कर लेट गया। तभी अचानक उसने एक अजीब सी एक चीज देखी। वह एक पुरानी घड़ी थी, जो एक पेड के नीचे पड़ी थी। रोहन ने उस घड़ी को उठाया और अपने घर ले आया। जब उसने उस घड़ी को चालू किया, तो उसने एक अजीब सी आवाज सुनी। वह आवाज एक रहस्यमयी संदेश था, जो रोहन को एक छुपे हुए खजाने के बारे में बता रहा था।

रोहन ने उस संदेश का पालन किया और उसने उस खजाने को ढूंढ लिया, वह खजाना एक बड़ा सा हीरा था, जो बहुत ही कीमती था।

रोहन ने लालच नहीं दिखाई वह अपने गाँव की भलाई और मदद के लिए, उसने हीरे को सभी गाँव के लोगों के साथ बाँटा, वे सभी बहुत खुश हुए।

## सुख

1 → हमें हमेश दूसरों के साथ मिल बाँट कर रहना चाहिए और खुशी पूर्वक रहना चाहिए।

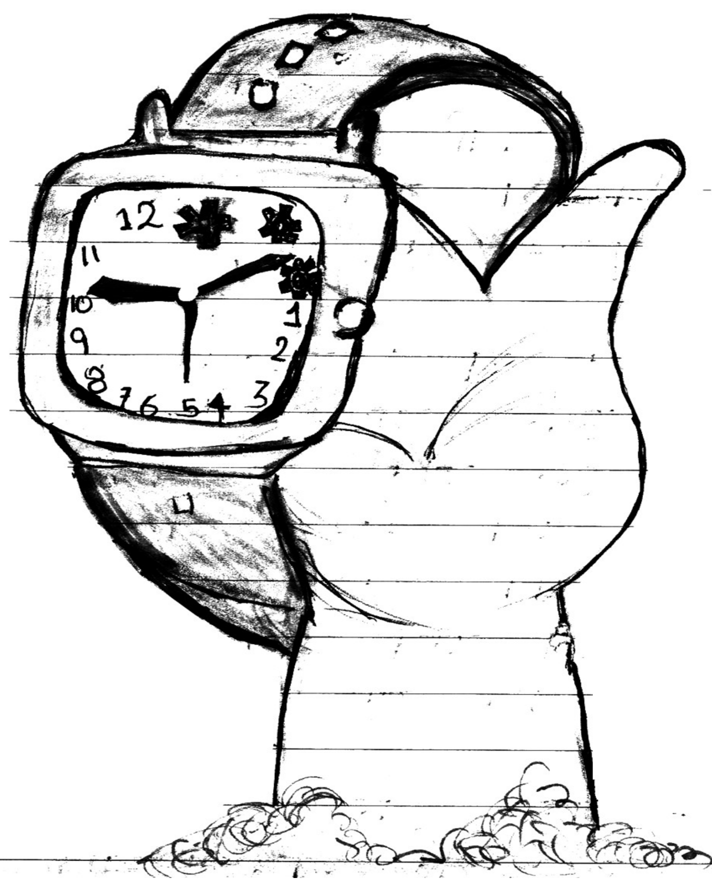

# पिता का दिया हुआ अनोखा उपहार

Noya Imam

रेहाना एक छोटे से कस्बे में रहने वाली लड़की थी। उसके पिता एक कारीगर थे, जो पुरानी चीजों से नई कृतियां बनाते थे। लेकिन रेहाना को अपने पिता का काम बेकार लगता था। वो सोचती थी कि पुरानी चीजें किसी काम की नहीं होती। एक दिन उसके पिता ने उसके जन्मदिन पर उसके पिता उसे एक उपहार दिया। वो एक टूटे हुए शीशे और पुराने लकड़ी के टुकड़ों से बना हुआ एक सुंदर फ्रेम था। फ्रेम में एक आईना भी था जिसमें रेहाना अपनी शक्ल देख सकती थी। पहले तो उसे अपने पिता का दिया हुआ, ये उपहार अच्छा नहीं लगा, लेकिन जब उसने आईने में देखा तो फ्रेम की बनावट ने उसकी तस्वीर बेहद खास बना दिया। रेहाना ने अपनी पिता से पूछा आप ने ये कैसे बनाया, तो पिता ने जवाब दिया हर टूटी चीज़ बेकार नहीं होती अगर उसे सही नज़र से देखा जाए तो उसे हम अपने काम में ला सकते हैं। उस दिन रेहाना ने महसूस किया की चीज़े और लोग दोनों में छिपी खूबसूरती को देखने का नज़रिया चाहिए।

शीर्षक - हर चीज़ अपने आप में अनोखी होती है, बस लोगों को उसे अच्छी नज़र से देखना चाहिए, न कि बुरी नज़र से।

# हम पंछी उन्मुक्त गगन के

Satwik, VIII B

हम पंछी उन्मुक्त गगन के
पिंजरबद्ध न गा पाएँगे,
कनक-तीलियों से टकराकर
पुलकित पंख टूट जाएँगे
हम बहता जल पीनेवाले
मर जाएँगे भूखे-प्यासे,
कनक-कटोरी की मैदा से।
स्वर्ण-शृंखला के बंधन में
अपनी गति, उड़ान सब भूले,
बस सपनों में देख रहे हैं
तरु की फुनगी पर के झूले।
ऐसे थे अरमान कि उड़ते
नीले नभ की सीमा पाने,
लाल किरण-सी चोंच खोल
चुगते तारक-अनार के दाने।
होती सीमाहीन क्षितिज से
इन पंखों की होड़ा-होड़ी
या तो क्षितिज मिलन बन जाता
या तनती साँसों की डोरी।
नीड़ न दो, चाहे टहनी का
आश्रय छिन्न-भिन्न कर डालो,
लेकिन पंख दिए हैं तो
आकुल उड़ान में विघ्न न डालो।

# छोटे सपने बड़ी उड़ान

भारती अर्थवी कृष्णा, 8B

छोटे-छोटे सपने लेकर,
दिल में एक अरमान,
उड़ने को हैं पंख हमारे,
भरने को आसमान।

कभी किताबो में खो जाते,
कभी सवालों से टकराते,
मंजिल पास हो या दूर कहीं,
हम हर कदम बढ़ाते॥

गिरोगे तो खुद संभलोगे,
हिम्मत से फिर चलेंगे,
हर मुश्किल को मात देकर
नई राहें खुद गढ़ेंगे।

सपनो का यह कारवां,
रुकेगा नहीं किसी मोड़ पर,
मेहनत, लगन, और हौसले पर,
हम लिखेंगे नई डगर॥

"सपने देखो, मेहनत करो,
और खुद पर विश्वास रखो"

# (दो शेर की दोस्ती)

आलोक कुमार (आठ बी)

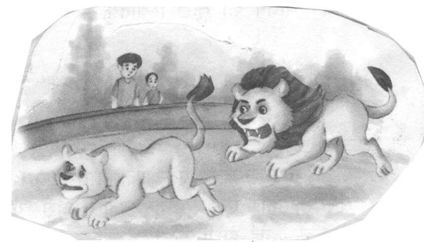

एक जंगल मे दो शेर रहते थे। दोनो मे बहुत ही पक्की वाली दोस्ती रहती थी, वह एक भाई की तरह रहते थे। दोनो शेरों का सपना था जंगल का राजा बनना। एक दिन जंगल मे राजा बनने वाली प्रतियोगिता आरंभ हुई। दोनो शेरो ने उस प्रतियोगिता मे भाग लिया। जो दो शेर भाई की तरह रहते थे, वह आज राजा बनने के लिए लड़ने लगे, वह अब एक-दूसरे के दुशमन बन चुके थे और जंगल का राजा भी अभी तक तय नही हुआ था। तभी सभी जानवरो ने मिलकर एक सुझाव दिया, की जो हमारे जंगल की अच्छे से रक्षा करेगा, और जंगल को साफ रखेगा। वह इस जंगल का राजा बनेगा। दोनो शेर राजा बनने के लिए बहुत परिश्रम करने लगें और दोनो ही अच्छे से काम कर रहे थे। एक बार जंगल मे बहुत तेज तूफान आया और बड़ा सा पेड़ गिर गया। सारे जानवरो ने उस पेड़ को देखा और कहा जो भी इस पेड़ यहाँ से हटाकर उस तालाब मे फेंक देगा वह राजा बनेगा। एक-एक करके दोनो शेरो ने बहुत कोशिश पर तब भी वह पेड़ किसी से भी नही हट पा रहा था। तभी एक हाथी ने सुझाव दिया की दोनो शेर मिलकर उस पेड़ को हटाए, और तरकीब काम आई, पर अभी जानवरो को उनको उनका राजा नही मिल पाया। तभी एक शेर ने बोला

बहुत हुआ अब हम दोनो मे मुकाबला होगा जो भी आखिर तक जिंदा रहा वह बनेगा राजा। दोनो शेर आधे घंटे से एक दूसरे को मारे रहे थे। दोनो शेर बहुत खराब तरह जखमी हो गए .पर मरा कोई नही। बहुत देर हो चुकी और सभी जानवर अपने घर चले गए। आधी रात मे बहुत तेज बारिश हो रही थी पहला शेर सोचता है और बोलता मैं ~~उसे~~ जा रहा हूँ उसे मारने वह अपने दोस्त को जान से मारने के लिए आधी रात मे निकलता है और बहुत तेज बारिश भी हो रही थी, वह शेर सोचता सुबह होने से पहले मुझे उसे मारना होगा, वह तेजी से उसके जा रहा होता है तभी उसका पैर पानी वाले मिट्टी से फिसल-ता है और वो तालाब मे डूब कर मर जाता है। सुबह जब सभी जानवर उस शेर का मरा हुआ देखते है तो वह बहुत दुख मे होते है पर उनको उनका राजा मिल जाता है, ~~उसके~~ ~~उस~~ दूसरे शेर यह बात ~~सुकर~~ सुनकर बहुत दुख होता है। और दूसरा शेर जंगल का राजा बन जाता है।

सीख => अगर हम दूसरो के बारे मे बुरा सोचते है तो ~~वह~~ भगवान हमारे साथ ही बुरा करते है।

# कहानी

Md. Warquan VIII 'B'

एक बार की बात है, गांव में एक छोटे से लड़के का नाम राजू था। राजू का सपना था कि वह अपने गांव का नाम रोशन करेगा। वह हमेशा सोचता था कि एक दिन वह ऐसा करेगा, जिससे सब के दिलों में अपना स्थान पाएगा।

एक दिन, वह गांव के पेड़-पौधों की देखभाल करने का निर्णय लेता है। वह हर रोज़ पेड़ों को पानी देता है। और उनकी देखभाल करता है।

समय बितता जाता है और राजू की देखभाल से पेड़ों की जिंदगी बदल जाती है। उनके पेड़ अब बहुत ही हरा-भरा और सुंदर हो जाता है।

गांव वाले का मन खुशी से भर जाता है; और वे गांव का हीरो मानते हैं। राजू का सपना पूरा होता है और वह अपने प्रयासों से गांव को रोशनी देता है।

यह कहानी हमे यह सिखाती है कि छोटे प्रयास से भी हम अपने सपने को पूरा कर सकते हैं और अपने समाज में परिवर्तन ला सकते हैं।

# एक लड़के की कहानी

तलहा खान...

एक लड़का जिसका नाम अरसलान था। उसका जन्म 21 अक्टोबर 2010 में कोलकता में हुआ था। उस के परिवार के लोग बहुत खुश थे। उसके पिताजी ने उसका दाखिला इतने बड़े शहर में एक सरकारी स्कूल में कराया था। जब वो लड़का उस स्कूल गया तो उसे अच्छा नहीं लगा की उसके पिताजी के पास तो पैसे बहुत है, फिर भी उसके पिताजी ने उसे इस स्कूल में भेजा। तो उस लड़के ने सोचा की पिताजी मेरे लिए कुछ अच्छा ही सोचे होगें। जब वो एक दिन स्कूल से घर आया तो उसे चिल्लाने ~~क~~और मारने-पीटने की आवाज आरही थी। तो उसने देखा की उसके पिता उसकी माँ को मार रहे हैं। ~~बोन्~~ उसे गुस्सा आया लेकिन उसने अपने गुस्से को दबाया। जब वो कक्षा '7' में गया तो उसने अपनी माँ से कहा की ~~मैं से~~ मेरे साथ कहीं और रहने चलिए, माँ ने पुछा कहा तो उसने कहा की मैं अपने से छोटे कक्षा के बच्चों को घर पे पढ़ाकर मैंने पैसा जमा किया। तो मैंने एक घर ~~कि~~किराए पे लिया। जब वो 25वर्ष का हो गया तो उसने ~~अखबार~~ सरकार से बात की और उसने कहा की अगर कोई भी मर्द औरत पे अत्याचार करेगा तो उसे जेल भेज दिया जाएगा।

"हमें डरना नहीं चाहिए"

"हम छोटे उमर में भी बहुत कुछ कर सकते हैं जो बड़े न कर पाते।"

# अच्छा हो मजाक!

Ananya 8 Beta

कुछ बालक खेतों मे से होकर गुजर रहे थे। रास्ते मे उन्हें खेतों पर काम कर रहे किसान की जूते एक पेड़ के नीचे पड़े मिले किसान काफी दूर काम कर रहा था। इसलिए उसके इन बच्चों को मस्ती सूझी। एक बोला, इन जूतों मे कंकड़ भर देखा नहीं। किसान जूते पहनकर चलेगा तो उसके पैर में चुभेगें। उसे समझ ही नहीं आएगा कि जूतों में कंकड़ कौन भर गया? यह दृश्य मजेदार होगा। सभी बच्चें हां मे हां मिलाने लगे लेकिन उनमे से एक काम करते हैं। हम उसके जूतों मे कुछ सिक्के डाल देते हैं। तब देखेगें कि उसके चेहरे पर कैसे खुशी होती है। उसने साथी की सलाह पर बाकी बच्चे भी राजी हो गए और उन्होंने आपस में पैसे मिलाकर जूतों मे डाल दिए। और अब एक पेड़ के पीछे जाकर छुप गए कि किसान ने आकर जूते पहने तो उसे जूतों में कुछ महसूस हुआ। उसने जूतों मे पैसे देखे तो हैरान रह गया। उसने कई बार जोर-जोर से आवाज लगाई - भाई यह पैसे किसके हैं? कोई जवाब ना आने पर उसने आसमान की ओर देखकर कहा शुक्रिया भागवान! आपने मेरा इंतजाम कर दिया। अब मे अपने बच्चों को आराम से खाना खिला पाऊंगा। बच्चे किसान की खुशी देखकर बहुत खुश हुए।

शिक्षा: मजाक ऐसा करे, जिससे सामने वाले को कष्ट न पहुंच और उसकी चेहरे पर खुशी दिखाई दो।

# ज़िंदगी कैसे जीनी चाहिए.....!

शांभवी कुमारी... 8 'Beta'

एक कारपेंटर था। बेहद मेहनती। तारीफें ही उसकी कमाई थीं। बूढ़ा हो चला था। एक दिन उसे विचार आया - अब यह सब छोड़कर परिवार के साथ आखिरी दिन बिताने चाहिए। वर्कशॉप के मालिक को उसने अपना यह विचार बताया। मालिक दुःखी हुआ, उसका सबसे विश्वसनीय कर्मचारी हमेशा के लिए जा रहा था। मालिक ने कुछ सोचा, फिर कहा - चलो, तुम एक आखिरी घर और बना दो। कारपेंटर का मन नहीं था। फिर भी उसने कहा - ठीक है, मैं अपनी ज़िंदगी का आखिरी लकड़ी का घर और बनाऊंगा। चूंकि, वह मन में पहले ही रिटायर हो चुका था, इसलिए उसने बड़ी मुश्किलों से वह घर पूरा किया। लेकिन उस घर को देखकर कोई भी कह सकता था, यह किसी नौसिखिए ने बनाया है। मालिक घर देखने आया, और बोला - यह मेरी तरफ से तुम्हारे लिए तोहफा है। अब कारपेंटर दुःखी हो गया। सोचने लगा - अगर यह घर मुझे ही मिलना था, तो मैं इसे दुनिया का सबसे शानदार घर बना सकता था।

**सीख:** हमारी ज़िंदगी भी ऐसी ही है।
उसे सर्वश्रेष्ठ बनाने का मौका
ईश्वर ने हमें ही दिया है।

# जब मैं जादूनगरी में पहुँच गया

हर्ष राज, आठ

मैं बचपन से कार्टून देखता आया हूँ। हमेशा इस बात से चमत्कृत रहा हूँ कि कैसे बैटमैन, सुपरमैन जैसे व्यक्तियों के पास असीम ताकत होती है। एक जादू की तरह कैसे ये शक्तियाँ प्राप्त कर लेते हैं? फिर हैरी पॉटर ने तो कमाल ही कर दिया! एक दिन मैं यूँ ही सोचता था कि काश! मैं भी कुछ शक्तियाँ प्राप्त कर पाता। अचानक एक दिन मैंने स्वयं को जादूनगरी में पाया। मैं हैरान था कि मैं यहाँ कैसे पहुँच गया। एक अवाज़ आई, "बच्चे" तुम बहुत भाग्यशाली हो जो यहाँ तक पहुँच गए। मैं तुम्हें तीन चीज़ें दूँगा, माँगो क्या माँगते हो?" मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा था। आवाज़ फिर से, "जल्दी करो, कहीं मौका चला न जाए।" मैंने हिम्मत करके कहा, "मुझे असीम शक्तियाँ मिले, समय आगे खिसक जाए और मैं लिवरपूल का एक महत्वपूर्ण फुटबॉल खिलाड़ी बन जाऊँ।" अगले ही पल में मैं लगभग 22 बरस का था। लिवरपूल का ~~एक~~ शर्त पहले मैच खेल रहा था और जीतते ही मैं पूरे स्टेडियम को अपने साथ लेकर हवा में खुशी से उड़ रहा था। मैं ज़ोर से चिल्लाया और आँख खुलते ही खुद को बिस्तर से नीचे गिरा पाया।

# हिरण कि प्यास

Saurav Anand VIII B

एक बार कि बात है, जब एक हिरण दो दिनों से प्यासा था और इधर-उधर पानी कि तलाश में भटक रहा था लेकिन उसे पानी नहीं मिला और वह थक हार कर एक पेड़ के निचे बैठ गया तभी उसे पानी कि लहरों कि आवाज़ आने लगी और वह आवाज़ कि ओर भागा चला गया। फिर उसने देखा कि वहाँ पर एक नदि है, वह बहुत खुश हो गया और पानी पिने नदि के पास चला गया लेकिन जैसे ही उसने पानी पिने के लिए अपना सर निचे किया तो देखा कि उसके बायीं ओर एक शिकारी हाथ मे बंदुक लिए खड़ा है फिर उसने अपनी दायीं ओर एक आवाज़ सुनी और देखा कि वहाँ पर एक शेर पेड़ों कि पिछे उसका शिकार करने के लिए छुपा हुआ है। तभी पिछे दूर से एक तुफान उसकी ओर आने लगा, अब वह हिरण चारों तरफ से फस गया था जहाँ एक तरफ शेर तो दुसरी तरफ शिकारी, आगे नदी तो पिछे तुफान। हिरण बहुत घबराया हुआ था लेकिन फिर वह सब कुछ भुलकर पानी पिना लगा, जो वह करने आया था तभी तुफान के कारण शिकारी का निशाना चुका और वह शेर को जा लगा, फिर वह शेर हिरण को भूल शिकारी के पिछे पड़ गया, जिस वजह से वह हिरण बच गया।

इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है की जिंदगी में चाहे जितनी भी मुस्किले आ जाए, हमें हमेशा अपना करते रहना चाहिए और कभी भी हार नहीं माननी चाहिए क्योंकि अगर हम सच्चे होंगे तो हमें कोई भी मुस्किल रोक नहीं सकती।

# बोले हुए शब्द वापस नहीं होते!!!

Pallavi VIII B

एक बार एक किसान ने अपने पड़ोसी को भला-बुरा कह दिया, पर जब बाद में उसे अपनी गलती का एहसास हुआ तो वह एक संत के पास गया। उसने संत से अपने शब्द वापस लेने का उपाय पूछा। संत ने किसान से कहा, "तुम सारे पंख इकट्ठा कर लो और उन्हें शहर के बीचों बीच जाकर रख दो।" किसान ने ऐसा ही किया और फिर संत के पास पहुँच गया। तब संत ने कहा, "अब जाओ और उन पंखों को इकट्ठा कर के वापस ले आओ।" किसान वापस गया पर तब तक सारे पंख हवा से इधर-उधर उड़ चुके थे, और किसान खाली हाथ संत के पास पहुँचा। तब संत ने उससे कहा कि ठीक ऐसा ही तुम्हारे द्वारा कहे गए शब्दों के साथ होता है। तुम आसानी से उन्हें अपने मुख से निकाल तो सकते हो पर चाह कर भी वापस नहीं ले सकते। सीख: कुछ कड़वा बोलने से पहले ये याद रखें की भला-बुरा कहने के बाद कुछ भी कर के अपने शब्द वापस नहीं लिए जा सकते। हाँ, आप उस व्यक्ति से जाकर क्षमा जरूर मांग सकते हैं, और मांगनी भी चाहिए, पर मानव प्रकृति कुछ ऐसा होता है की कुछ भी कर लिजिए इंसान कहीं ना कहीं चोट हो ही जाता है। जब आप किसी को बुरा कहते हैं तो वह उसे कष्ट पहुँचाने के लिए होता है। बाद में वो आप ही को अधिक कष्ट देता है, खुद को कष्ट देने से क्या लाभ, इससे अच्छा तो है कि रहा जाए!!!

# चतुर किसान

Ragini Dangi VIII, Beta

एक बार की बात है, एक किसान के पास एक बकरी, घास का एक गट्ठर और एक शेर था। उसे एक छोटी नाव पर एक नदी पार करनी थी, जो एक बार में उनमें से केवल दो को ही ले जा सकती थी। किसान मुश्किल में था। यदि वह पहले शेर को ले जाए, तो ~~शे~~ शेर बकरी को खा जाएगा।

अंत में उसे एक सही समाधान मिला।

पहले वह बकरी को ले गया और नदी के उस पार छोड़ दिया। फिर उसने दूसरी बार में शेर को अपने साथ ~~घास~~ ~~छोड़~~ ले गया। वह शेर को छोड़कर बकरी को वापस ले आया।

अब बकरी को इस ओर छोड़कर घास की गठरी को नदी की दूसरी ओर ले गया। वह शेर के साथ घास छोड़ गया और अंत में बकरी को लेने के लिए लौट आया।

इस प्रकार, इस किसान ने बिना किसी नुकसान के नदी पार कर ली।

# बार्डर पर सैनिक

Aditya Sushant. 8 B

ठंडी हवाएँ चल रही थीं। चारों तरफ बर्फ ही बर्फ थी। सूरज की किरणें भी उस बर्फीले माहौल को ज्यादा गर्म नहीं कर पा रहीं थीं। लेह - लद्दाख की ऊँचाइयों पर तैनात भारतीय सैनिक दिन - रात देश की रक्षा के लिए डटे हुए थे। उनमें से एक था कैप्टन अरुण। कैप्टन अरुण अपने साथियों के साथ चौकी पर तैनात था। उनकी ड्यूटी ~~अपने~~ बहुत कठिन थी - हर समय सतर्क रहना, दुश्मन की गतिविधियों पर नजर रखना और किसी भी आपात स्थिति के लिए तैयार रहना। लेकिन इन सबके बावजूद उनके चेहरे पर कभी थकान या डर नहीं दिखता था। उस रात घना कोहरा छाया हुआ था। अरुण और उसके साथी चौकसी कर रहे थे। अचानक वायरलेस पर संदेश आया - दुश्मन सीमा पर हरकत कर रहे हैं। सभी सैनिक तुरंत सतर्क हो गए। अरुण ने अपनी टीम को तैयार रहने का आदेश दिया। रात के अंधेरे में कुछ हलचल हुई।

दुश्मन सैनिक चोरी-छिपे भारतीय सीमा में घुसने की कोशिश कर रहे थे। कैप्टन अरुण ने सूझ-बूझ से काम लिया। उन्होंने अपने सैनिकों को संकेत दिया और अपनी-अपनी पोजीशन पर तैनात हो गए। जब दुश्मन कुछ और आगे बढ़े, तो अरुण ने जोर से चिल्लाया, "फायर"। तुरंत गोलियाँ चलने लगीं। भारतीय सैनिकों ने बहादुरी से मोर्चा संभाल लिया। थोड़ी ही देर में दुश्मन पीछे हटने पर मजबूर हो गए। अरुण और उनकी टीम ने बड़ी वीरता से हमला विफल कर दिया। लड़ाई खत्म होने के बाद कैप्टन अरुण अपनी चौकी पर वापस लौटे। साथी सैनिकों ने उनके साहस की सराहना की लेकिन अरुण ने मुस्कुराते हुए कहा, "हम अपनी जान की परवाह नहीं करते, क्योंकि हम अपने देश की रक्षा के लिए यहाँ हैं। भारत की सुरक्षा ही हमारी सबसे बड़ी जिम्मेदारी है"। उनकी यह बातें सभी सैनिकों के दिल को छू गईं। दूर आकाश में तिरंगे का उजाला मानो उनकी बहादुरी को सलाम कर रहा था।

# देश भक्ति

SYED ABAN FAISAL, 9C

हमारा देश है प्यारा,
हर दिल में है इसका नारा।
जहाँ खेतों में हरियाली,
जहाँ बच्चों की है मुस्कान,
यही है हमारा हिन्दुस्तान।

वो वीर जवानों का खून,
जो सीने में धड़कता है।
उनकी शहादत के बदौलत,
देश हमारा संजीवित रहता है।

धरती माँ की पूजा करें,
उसकी रक्षा में जान दें।
हम सबका कर्तव्य है यही,
देश को सबसे ऊपर रखें।

हर भाषा, हर रंग, हर ~~जात~~, धर्म
सबको मिलकर रहना है साथ।
हम भारतवासी एक हैं,
यही हमारी पहचान है।

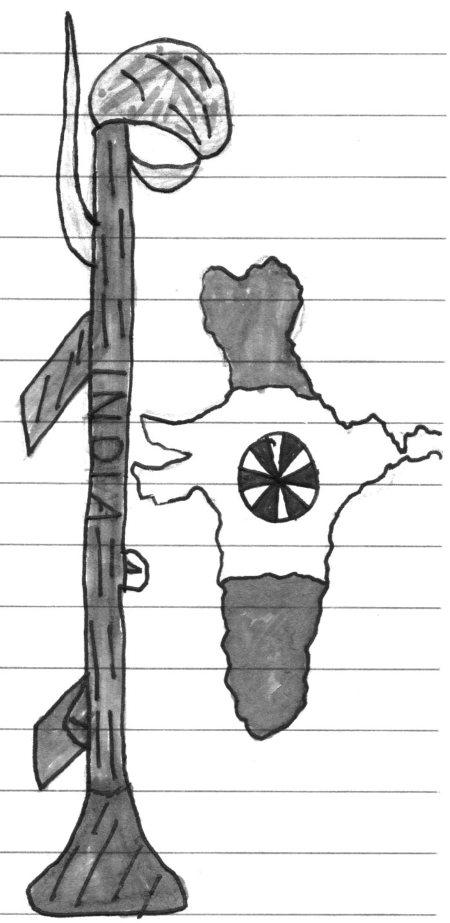

# स्त्री शिक्षा

Aksharam Sharma IX 'A'

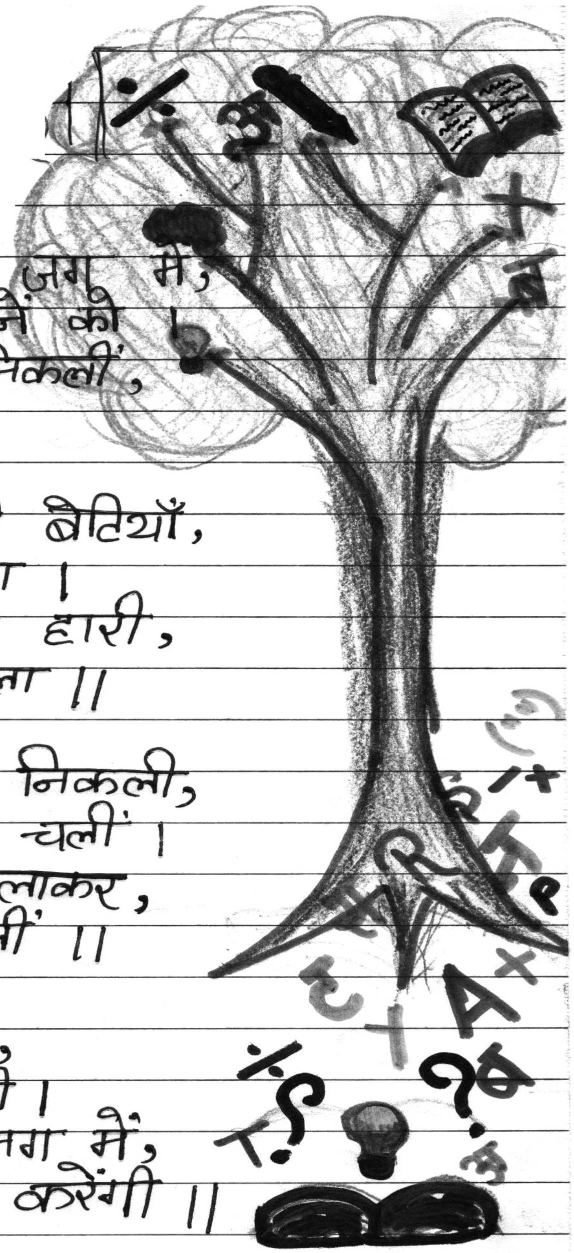

नन्हीं किरणें आईं जग में,
ज्ञान की जोत जलाने को।
अंधकार से लड़कर निकलीं,
नव संसार बसाने को॥

कलम पकड़ जब बढ़ी बेटियाँ,
सपनों को आकार मिला।
शिक्षा से हर मुश्किल हारी,
आशा को आधार मिला॥

घर - आँगन से आगे निकली,
नए गगन को छूने चलीं।
संघर्षों के दीप जलाकर,
नई रोशनी बिखेर चलीं॥

जो पढ़ेगी, वो बढ़ेगी,
आगे नई मिसाल करेगी।
ज्ञान की रोशनी से जग में,
नव निर्माण संभाल करेगी॥

# प्रकृति

Srishti Snehal IX 'A'

प्रकृति हमारी जननी है
हम इसकी संतान
इसपर रहकर, खाकर, पीकर
हम बनते हैं इंसान
कर्ज बहुत है हम पर इसका
क्योंकि यह है बहुत महान
निस्वार्थ भाव से करती सबकुछ
बिना किसी एहसान
आओ इसको सजा सँवार दें
अपना थोड़ा कर्ज उतार लें
इसे बना दे स्वर्ग समान...

# संघर्ष की वास्तविकता

आरव सिन्हा IX 'a'

जीवन में संघर्ष सब करते हैं। कोई ज़्यादा करता है तो कोई कम। सबके जीवन में उतार-चढ़ाव अनिवार्य हैं। बिना इन चिज़ों के, ज़िंदगी को कोई एक ज़िंदगी नहीं कह सकता।

मैंने अपने ज़िंदगी में संघर्ष तो इतना ज़्यादा नहीं देखा अब तक पर जितना भी देखा है, उससे आगे आने वाले समय के लिए प्रेरित हो रहा हूँ। संघर्ष का मतलब बहुत लोग केवल दुख समझते हैं, पर वास्तविकता में संघर्ष एक प्रकार का वह समय है जो आदमी की बुद्धिमता पर निर्भर करता है। या तो वह इस समय का उपयोग कर कुछ नया सिखे या तो फिर इस समय से डर-कर भागने का प्रयास करे। यह समय इनसान को वास्तविकता से परिचित कराता है। यह समय या तो व्यक्ति को तोड़ देता है या तो उसे आगे आने वाले जीवन का मतलब और लक्ष्य बता जाता है। यह समय इनसान को उसका व्यक्तित्व बताता है। इस समय की जो अहमियत समझ जाता है, वह अपने पूर्ण जीवन में सफल कर जाता है तथा कोई भी कठिनाई का सामना करने के लिए तैयार हो जाता है।